देश दर्शन
क़ाहिरा-दर्शन
नवम्बर १९४६ वर्ष ८
कार्तिक २००३ संख्या ५
सम्पादक
प्रकाशक
'भूगोल'-कार्यालय, इलाहाबाद
वार्षिक मूल्य
भूगोल कार्यालय – प्रयाग

विषय-सूची

विषय		पृष्ठ

स्थिति, सीमा, तथा विस्तार

भारतवर्ष की भाँति मिस्र एक बहुत ही प्राचीन सभ्य देश है। इसी कारण इसका इतिहास भी बहुत पुराना है। केरो (क़हरा) मिस्र की राजधानी है। अतः मिस्र के इतिहास का इससे गहरा सम्बन्ध है। मिस्र का इतिहास संक्षिप्त रूप से १२ कालों में विभाजित हो सकता है।

१ प्राचीन साम्राज्य—यह साम्राज्य ईसा के पूर्व ४००० वर्ष से ३००० वर्ष पूर्व तक रहा। इस काल में १० वंशों ने राज्य किया। प्रथम वंश का संस्थापक मैना था जिसने लगभग ४ हज़ार वर्ष ईसा के पूर्व प्रथम वंश की नीव डाली थी।

२ मध्य कालीन साम्राज्य—यह साम्राज्य २३०० वर्ष ईसा के पूर्व से १५०० वर्ष ईसा के पूर्व तक रहा। इस काल में ग्यारहें वंश से सत्रहवें वंश वालों तक का राज्य था।

३ नवीन साम्राज्य—इस साम्राज्य का इतिहास १६०० वर्ष ईसा के पूर्व से आरम्भ होता है और

६०० वर्ष ईसा के पूर्व तक चलता रहा। उन्नीसवें वंश में रामास प्रथम तथा रामास द्वितीय के समय में लगभग १३५० वर्ष ईसा के पूर्व मिस्र अपनी उन्नति की शिखर पर पहुँच गया था। चौबीसवें वंश के साथ साथ इस काल का अंत होता है।

४ पिछला मिस्री काल—यह ७०० वर्ष ईसा के पूर्व से ३५० वर्ष के पूर्व तक रहा। इस काल में २५ वें वंश से लेकर ३० सवें वंश तक ने राज्य किया। इसकाल में मिस्र की शक्ति क्षीण होती चली गई और ६०० वर्ष ईसा से पूर्व मिस्री काल का अंत हो गया। ३३२ वर्ष ई० पू० सिकन्दर महान ने मिस्र को विजय किया। उसके पश्चात् ३०० वर्ष तक मिस्र पर यूनानियों का शासन रहा। ३० बी० सी० में मिस्र रोमन साम्राज्य का एक प्रान्त बना लिया गया।

५ यूनानी-रोमन काल—इसका आरम्भ ३० बी० सी० से होता है। इस काल में सिकन्दर ने मिस्र पर अधिकार किया रोमन शासन के पश्चात् बैजन्टाइन शासन रहा।

६ कापिटक तथा अरबी काल—यह काल ६४० ई० से आरम्भ होता है। ६०० वर्ष तक रोमन शासन रहा उसके पश्चात् ६१६ ई० में फारस वालों का शासन आरम्भ हुआ। ६२६ ई० रोमन लोगों ने पुनः अपना अधिकार जमा लिया। उसके बारह वर्ष के पश्चात् उम्र नामक अरबी सेनापति ने मिस्र की विजय की। वह खलीफा उमर का प्रधान सेना पति था।

७ खलीफों का शासन काल—यह काल ६४२ ई० से ११७१ ई० तक रहा। इस काल में मिस्र की राजधानी फास्टैट थी। क्रूसेडरों के अधिकार में चले जाने के भय से ११६८ ई० में यह नगर जला दिया गया था। उसके पश्चात् ८६८ ई० से १२७१ ई० तक तालीनदों तथा फातिमा घरानों का शासन मिस्र में रहा। इस काल में हज़र का विश्वविद्यालय तथा मसजिद बनाए गये।

८ अयूबी बंश का शासन काल—इस घराने के शासकों ने ११७१ ई० से १२५० ई० तक शासन किया। उनके शासन काल में ११७६ ई० में यहां का दुर्ग बनाया गया था।

९ तुर्कोमन ममलूक काल—यह १२५० ई० से १३८२ ई० तक रहा। इस काल में कला-कौशल की काफी उन्नति हुई। १३११ ई० में सुलतान गुर्गी ने नाली बनवाई थी।

१० सरकासियन ममलूक काल—इस घराने के राजों ने १३८२ ई० से १५१७ ई० तक राज्य किया था। इस प्रकार अरबों ने मिस्र पर लगभग ८७६ वर्ष तक राज्य किया।

११ आटोमन शासन काल—सलीम प्रथम तुर्की सुल्तान ने १५१७ ई० में मिस्र की विजय की और लगभग ४०० वर्ष तक मिस्र तुर्की साम्राज्य के अधिपत्य में रहा। इसी काल में १७९८ ई० में नेपोलियन ने मिस्र को तुर्कों के हाथ से छीन लिया परन्तु तीन वर्ष के पश्चात् वह मिस्र छोड़ने पर विवश हो गया। ५ मार्च १८०१ ई० को बृटिश सेना मिस्र में उतरी। अबाकर और सिकन्दरिया के युद्धों के पश्चात् फ्रांसीसी मिस्र से बाहर खदेड़ दिये गये। १८०७ ई० में बृटिश सेना ने मिस्र खाली कर दिया।

उसके पश्चात् वहां फिर तुर्कों का राज्य स्थापित हो गया।

१२—बृटिश काल—१८८२ ई० में अंग्रेज़ सेना अरबी पाशा का विप्लव दबाने के लिये पुनह मिस्र में दाखिल हुई। तेलुलकबीर का युद्ध हुआ और केरो पर अंग्रेज़ों का अधिकार हो गया। उसके पश्चात् यद्यपि मिस्र तुर्की साम्राज्य के आधीन रहा फिर भी अंग्रेज़ी सेना मिस्र में जमी रही। १९१४ ई० के महायुद्ध काल में अंग्रेज़ों ने तुर्कों को मिस्र से निकाल बाहर किया। १९१४ ई० में बृटेन में अपने प्रोटेक्टोरेट (संरक्षता) की घोषणा की। १९२२ ई० में ब्रिटिश पार्लियामेंट ने मिस्र के स्वतंत्र राज्य की घोषणा की। इस प्रकार मिस्र का प्राचीन इतिहास संक्षिप्त रूप से १२ कालों में विभाजित है। ऐतिहासिक दृष्टि से मिस्री शासन तेरहवां काल माना जा सकता है। अंग्रेज़ी सेना ने अब तक वहां अपना अधिकार जमा रक्खा है। 'मिस्र छोड़ो' के नारे उनके विरुद्ध स सार के आधुनिक महासमर के पश्चात् से लगाये जा रहे हैं पर अभी वहां से ब्रिटिश सेना नहीं हटाई गई हैं। मिस्र पूर्ण रूप से स्वाधीन होना चाहता है पर अभी तक वह नहीं हो

पाया। आशा है कि कुछ वर्षों में उसे अपने संघर्ष में विजय प्राप्त हो जावेगी।

इतिहास तथा दंत कथायें

क़हरा नगर की बुनियाद के सम्बन्ध में बहुत सी दंत कथायें प्रचलित हैं। पर यह ऐतिहासिक सत्य है कि जब मिस्र पर अरबकाल में पूर्वी रोमन साम्राज्य का अधिकार था तो सन् ६३० ई० में क़हरा नगर की नीव पड़ी थी जिस स्थान पर आधुनिक केरो नगर बसा है वहां पर "मिस्र" नामक बन्दरगाह था जिसकी रक्षा बाबुलमंदब के रोमन दुर्ग द्वारा होती थी। उस समय वहां पर सेण्ट जार्ज नामक एक क़िला भी था जिसमें रोमन सैनिक रक्षार्थ रहा करते थे। उस समय मिस्र नगर के निवासी ईसाई धर्म के थे। यह काप्टस लोग थे अब भी यह लोग वहीं रहते हैं। यह मिस्र के आदि निवासियों की सन्तान हैं। जब सन् ६४१ ई० में अरबी सेनापति उम्र ने मिस्र पर अधिकार किया तो उसने सेण्टजार्ज तथा बाबुलमन्दब के दुर्गों को गिरवा

दिया। उसने वहीं समीप ही उम्र नाम की मसजिद बनवाई थी।

इस मसजिद के चारों ओर "फास्टैट" नामक एक कस्बा बस गया था। उसके पश्चात् नगर की रक्षा के लिये उसके चारों ओर एक मज़बूत दीवार बनवा दी गई थी। मिस्र दंत कथा के अनुसार जब नगर के चारों ओर भीत बनाई जा रही थी तो मङ्गल नक्षत्र अपनी शिखर पर थे। अरबी भाषा में मङ्गल को एल काहिरा कहते हैं जिसका अर्थ विजयी होता है। इसलिये नगर का नाम फास्टैट से फास्टैटुल काहिरा पड़ गया। धीरे धीरे नाम के अग्र भाग का प्रयोग बन्द हो गया और नगर को लोग एलकाहिरा नाम से पुकारने लगे थे। उसके पश्चात् यह बिगड़ कर काहिरा या कैरो शेष रह गया। कैरो का अरबी नाम मिस्र है।

९६९ ई० में गोहर नामक फातिमा वंश के सेनापति ने मिस्र को विजय की और फास्टैट के उत्तर नवीन-कैरो नगर बसाया। ९८९ ई० में अलाज़र नामक मस-जिद बनी थी। यह मसजिद मुसलमानों में संसार के विद्या का केन्द्र है। यह मुसलमानी शिक्षा का केन्द्र है।

सलाउद्दीन के शासन काल में नगर में एक दुर्ग

बना था और फास्टैट तथा काहिरा दोनों नगर मिला दिये गए थे।

सलादीन के पश्चात् ममलूक वंश वाले आए। जिनके समय में भाषा, कला और विज्ञान की अच्छी उन्नति हुई और एल काहिरा नगर का फैलाव बढ़ गया। १३११ ई० में नील नदी से कैरो के किलों को पानी पहुँचाने के लिये एक नाली अथवा नहर बनाई गई। इस नाली का कुछ भाग अब भी शेष रह गया है।

१५१७ ई० में टर्की के सुल्तान सलीम प्रथम ने मिस्र की विजय को तब से गत शताब्दी के अंत तक टर्की का मिस्र पर अधिपत्य चलता रहा। इस काल में मिस्र टर्की का एक प्रान्त बन गया था जिसके गवरनर की नियुक्ति टर्की के सुल्तान करते थे। ममलूक वे अमीरों की कौंसिल प्रान्त का शासन करती थी।

२१ जुलाई सन् १७९८ ई० में नैपोलियन ने मिस्र पर आक्रमण किया। पिरेमिड के युद्ध के पश्चात् शेपर्ड्स होटल के स्थान पर नैपोलियन ने अपना केन्द्र बनाया। उसके पश्चात् मिस्र पर फ्रांसीसियों का प्रभुत्व

जम गया। जब १८०१ ई० में अबेरकोम्बी ने फ्रांसीसियों को परास्त किया तो मोहम्मद खौसरऊफ नामक तुर्की सेनापति के हाथ में मिस्र का शासन सौंप दिया गया। १८०५ ई० में मोहम्मद अली पाशा मिस्र का शासक बनाया गया। उसने फ्रांसीसी सैनिकों की नियुक्ति की। जब मोहम्मद अली पाशा ने देखा कि ममलूक बे अमीर देश में भांति भांति के उपद्रव पैदा कर रहे हैं तो उसने उनको १८११ ई० में एक सिटैडिल (किले) निमन्त्रित करके उन्हें मरवा डाला केवल एमिन बे नामक सरदार भाग कर निकल गया था।

१५ जुलाई १८४० ई० को लन्दन के निर्णयानुसार तुर्की के सुल्तान ने मोहम्मद अली पाशा के वंश को मिस्र का शासक स्वीकार किया। १८६६ ई० को मोहम्मद अली पाशा के पौत्र इस्माइल पाशा को खिदेव की उपाधि प्रदान की गई।

प्रथम खेदिव के शासन काल में केरो की अच्छी उन्नति हुई। उसी समय आपरा हाउस, मोहम्मद अली सड़क, अतबउल खादरा स्क्वाएर आदि निर्माण किये गये थे। इस्लामिया नहर तथा जीतौन रेलवे का श्रीगणेश

भी हुआ। इनके अतिरिक्त और भी दूसरी सड़कें, रेलें तथा पुल बनाये गये इन सब कार्यों में बहुत खर्च पड़ा जिससे मिस्र को दूसरे देशों से आर्थिक सहायता लेनी पड़ी। मिस्र ने स्वेज़ नहर के हिस्सों को अंग्रेज़ों के हाथ बेच डाला।

जब १३ सितम्बर सन् १८८२ ई० में तेलुलकबीर स्थान पर अरबी पाशा की पराजय हुई तो अंग्रेज़ों का प्रभुत्व मिस्र पर पुनह आरम्भ हुआ। १९१४ ई० के महासमर में जो घटनाएं टर्की तथा इंगलैंड के मध्य में घटीं उनके फलस्वरूप १८ दिसम्बर १९१४ ई० को मिस्र को अंग्रेज़ी संरक्षित प्रदेश होने की घोषणा की गई।

सुल्तान केमाल की मृत्यु के पश्चात् ९ अक्तूबर सन् १९१७ ई० को शहज़ादा फाऊद मिस्र का शासक बना। १५ मार्च सन् १९२२ ई० को ब्रिटिश पार्लियामेंट ने मिस्र के स्वतंत्र राज्य की घोषणा की और सुल्तान फाऊद की पदवी मिस्र के राजा की हो गई। अब मिस्र के उत्तराधिकारी राजकुमार फारूक हैं जिनका जन्म ११ फरवरी सन् १९२० ई० को हुआ था। फाऊद

राजा के शासन में केरो नगर की दिन प्रति दिन उन्नति होती जा रही है।

जलवायु

केरो नगर में समस्त वर्ष दिन में कड़ी धूप रहती है। नीला आकाश सदैव स्वच्छ तथा साफ दिखलाई पड़ता है। शीत काल में यहां की जलवायु बहुत सुन्दर हो जाती है इसका मुख्य कारण यह है कि उस समय यहां गरमी तथा सर्दी दोनों पड़ती है। दिन में कड़ी धूप के कारण शीत की कमी और गरमी की विशेषता हो जाती है। रात में रेगिस्तान की ठंडी हवाएँ नगर में पहुँचती हैं और नगर को सर्द बना देती हैं। नवम्बर, दिसम्बर, जनवरी और फरवरी मास में यहां का मौसम बड़ा सुहावना रहता है। इसी काल में यहां बाहर से आने वाले यात्रियों की भीड़ हो जाती है।

जून, जुलाई, अगस्त और सितम्बर मास में यहां बहुत अधिक गरमी पड़ती है शेष आठ महीने सर्दी पड़ती है।

वायुसेवन तथा स्वस्थ बनने के लिये केरो नगर की जलवायु बड़ी ही सुन्दर है। स्वास्थ सुधारने के लिये योरुप के लोग अधिकांश मात्रा में यहां आते हैं। हेलोवान में गंधक के सोतों तथा गड्ढों में स्नान करने के लिये संसार के कोने कोने से लोग आते हैं। सीने तथा हृदय के प्रत्येक भांति के रोगों का निवारण केरो में किया जाता है। जिन लोगों ने यहां के प्रसिद्ध स्पाओं से लाभ उठाया है उनका कथन है कि केरो नगर अपनी जलवायु तथा स्वर्णमयी धूप से मानव जाति के जीवन काल की ओर अधिक बढ़ा देता है।

नवम्बर के आरम्भ से लेकर अप्रैल के अंत तक केरो में बड़ी चहल पहल रहती है नगर में दौड़ों, खेल, तमाशों, नाच-गानों, ड्रामों आदि की धूम रहती है।

केरो नगर

संसार के समस्त देशों की राजधानियों में केरो नगर सब से सुन्दर है। यह खलीफाओं की नगरी है। यहां भांति भांति के सुन्दर दृश्य हैं जिन्हें देखकर मनुष्य

का हृदय लालायित हो जाता है। यहां पूर्वी तथा पश्चिमी सभ्यता का मिश्रण है। एक ओर योरुपीय राजधानियों की शान-बान तथा सज-धज दिखाई पड़ती है तो दूसरी ओर ऊँची मीनारें, गुम्बदें और नारियल के वृक्षों का समूह दृष्टिगोचर होता है। घनघनाती ट्राम-गाड़ियों तथा सनसनाती मोटर बसों वाली सड़कों पर बरामदों आदि में पब्लिक के पत्र तथा अर्ज़ियाँ लिखने वाले मुहर्रिर अपनी अपने डेस्कों के सामने दरियों पर बैठे दिखलाई पड़ते हैं। शेपर्ड्स होटल से कुछ ही दूरी पर प्राचीन जीवन के अनेकों दृश्य दिखलाई पड़ेंगे जिनमें खलीफा हारून रशीन अली के समय से अब तक में किञ्चित मात्र भी भिन्नता नहीं आई है।

केरो आधुनिक मिस्र का एक नमूना है। यहां लीबिया के मरुप्रदेश के पठार स्फिन्क्स तथा पिरेमिड हज़ारों वर्ष से आजतक वैसे के वैसे ही वर्तमान हैं।

केरो नगर मिस्री सरकार की राजधानी है। यह अफ्रीक़ा तथा अरबी संसार का सब से बड़ा नगर है। इसका क्षेत्रफल ८ वर्ग मील तथा जन संख्या १० लाख से ऊपर है। मध्यकालीन समय में यहाँ समस्त अफ्रीक़ा

से कारवां सामान लाद लाद कर भूमध्यसागर के तट पर आते थे। "एल मनाक़" ऊँटों के ठहरने का स्थान नामक सड़क अब भी प्राचीन काल की याद दिलाती है।

आधुनिक केरो नगर का सचित्र वर्णन वहाँ का शेपर्डस होटल स्वयं करता है क्योंकि यहां मिस्री, मूरी तथा न्यूबियन सभी सभ्यताओं का प्रदर्शन है। यहां यदि चाय पीने के लिये बैठ जाइये तो केरो के बदलते हुये जीवन की सुन्दर रूप-रेखा देखने को मिल जाती है।

शैरिया केमिल केरोनगर की सब से बड़ी दुकानों वाली सड़क है। वहाँ की दुकानों के नाम तथा साइन-बोर्ड स्वयं घोषणा करते हैं कि कृषक श्रेणी को छोड़कर समस्त केरो निवासी अपनी जीविका के लिये संसार के दूसरे लोगों पर निर्भर हैं। रोमन, यूनानी, अरबी और आर्मेनियन सभी लोग एक दूसरे के पड़ोसी हैं भांति भांति के सामान तथा खोंचे बेचने वालों की आवाज़ों से गलियाँ गूँजती रहती हैं।

अंग्रेज़ सैनिकों तथा अफसरों की भीड़ का दृश्य

भी कम मनोरञ्जक नहीं होता है। यह लोग मिस्री सरकार के यहाँ कार्य करने वाले सैनिक तथा पदाधिकारी होते हैं सैनिक तथा सरकारी पदाधिकारी प्रायः खाकी भेष में रहते हैं।

इस्माइलिया तथा तौफीकिया में योरुपीय लोगों के घर हैं। तोफीकिया का केन्द्र स्वेकिया वाटिका है। आपेरा स्क्वाएर के सामने एक सुन्दर मूर्ति इस्माइल के पिता इब्राहीम पाशा की है वह आधुनिक मिस्र का सब से बड़ा सिपाही था। इस भव्य मूर्ति के पीछे आपरा घर है। इस घर में सर्व प्रथम ऐदा नामक खेल तयार किया गया था। यह स्वेज नहर के खुलने के समारोह के समय किया गया था। शारिया ऐब्डिन में शारिया कैमिल के सिरे पर शाही महल हैं। यहीं ऐब्डिन का आधुनिक महल है। बनावट में यह महल लन्दन के बकिंघम महल की भांति है। शाही संरक्षक संतरी लोग खाकी पोशाक पहने हुये और उसके ऊपर लाल पट्टे लगाए पहरा देते रहते हैं। यह लोग चुने हुये सुडौल जवान होते हैं।

काहिरा नगर का प्रधान बाज़ार शारिया कामेल से नील नदी तक चला गया है। बाज़ार की सड़क के दोनों

ओर छायादार वृक्ष लगे हुये हैं। बाज़ार में विदेशी लोगों की भीड़ देखने को मिलती है। विदेशी लोग अधिकांश संख्या में काफी घरों होटलों आदि में मिलते हैं।

इस्माइलिया और तौफीकिया मुहल्ले नील नदी तक फैले हुये हैं। इन मुहल्लों में बड़े बड़े क्लब घर तथा धनी पाशाहों के महल हैं। महलों के सामने बड़े बड़े मैदान तथा सुन्दर वाटिकाएँ हैं।

कहिरानगर में नील नदी को पार करने के लिये पुल बना हुआ है। समस्त दिन भर और रात्रि में भी बहुत देर तक आने जाने वाले व्यक्तियों की भीड़ पुल पर लगी रहती है। आर पार जाने वाली भीड़ में भाँति भाँति की सवारियाँ तथा लोग रहते हैं। ऊँटों के क़ाफिलों पर देहात की पैदाइश की वस्तुएँ लोग नगर में बेंचने के लिये लाद लाद कर ले आते हैं और नगर से फिर दूसरे सामान देहात बेंचने के लिये ले जाते हैं। जिस प्रकार हमारे देश में एक बैल वाली गाड़ियाँ जिसे एक्की कहते हैं चलती हैं उसी प्रकार मिस्र में एक गदहे द्वारा खींचीं जाने वाली एक्की गाड़ियां चलती हैं। इन

गाड़ियों पर बहुधा देहाती स्त्रियाँ तथा पुरुष नगर में दर्शन हेतु अथवा दूसरे कार्यों के लिये आते हैं। इन लोगों का भेष अजब होता है। स्त्रियाँ धूल से परिपूर्ण काला पर्दा डाले रहती हैं वह अपनी नाक में अजीब तरह का आभूषण ग्रहण करती हैं जैसे कि हमारे यहाँ देहाती स्त्रियाँ नाक में नथ पहनती हैं। इनके अतिरिक्त मोटरकारें, गाड़ियां, फौजी लारियाँ तथा दूसरे भाँति भाँति के छकड़ों की भीड़ पुल पर लगातार आती जाती रहती है। पुल पर इधर उधर संकरे पैदल मार्ग हैं जिनसे लोग पैदल पुल पार करते हैं।

नील नदी के तट पर बसे हुये भाग में बड़ी सुन्दर सुन्दर वाटिकाएँ लगी हुई हैं जिनमें सुन्दर सुन्दर पुष्प खिला करते हैं। नील नदी के बड़े पुल पर क़ाहिरा का प्रसिद्ध म्यूज़ियम (अजायब घर) स्थित है। यह अजायब-घर बहुत बड़ा तथा लम्बा चौड़ा है। यहाँ मिस्र की समस्त प्राचीन वस्तुओं का संग्रह किया गया है। यह संसार का सब से बड़ा मिस्री अजायब घर है। यह प्राचीन मिस्री खज़ाने का केन्द्र है। यहां मिस्र के प्राचीन महाराजाओं तथा महारानियों की सभी (लाशें) सुन्दर

कफ़नों से ढकी हुई रक्खी हैं। यहीं पर तूतनखामेन राजा का मक़बरा भी है। पुल के दूसरी ओर गज़ोरा द्वीप है। यह नील नदी का द्वीप है यहाँ की जलवायु बड़ी सुन्दर है। यहाँ चौबीस घंटे नील नदी की शीतल वायु के झोंके चला करते हैं। इसी कारण अधिकांश संख्या में अंग्रेज यहीं रहा करते हैं।

क़हरा नगर के अरबी मुहल्लों का भ्रमण करने से अरेबियन नाइट की कहानियों की याद आ जाती है क्योंकि अधिकांश कहानियों का सम्बंध ही इन्हीं मुहल्लों से हैं। यहीं पर गोहर और फातिमा बादशाहों का प्राचीन नगर बसा था।

अरबी लोगों का केन्द्र मस्की है। यह एक बड़ा लम्बा बाज़ार है जो आज योरुपीय रूपरेखा का बन गया है। यह बाज़ार नगर के पूर्व पहाड़ी के नीचे बने हुये खलीफों के मकबरों तक फैला हुआ है। मस्की में मिस्र के आदि निवासियों की भीड़ देखने में आती है वहां मिस्र के प्राचीन ढंग की शैली कला कौशल का भी प्रदर्शन है। यहां गलियों में भाँति भाँति के खोंचे वालों की भीड़ रहती है जिनके ऊंचे स्वरों से समस्त

बाज़ार गूंजता रहता है। पर जैसे खानेक-खलीली बाज़ार को ओर लोग घूम जाते हैं उन्हें शान्ति प्राप्त हो जाती है। यह क़हरा की बाज़ारों में प्रधान माना जाता है यहां की गलियां संकरी हैं और गलियों तथा सड़कों पर मुश्किल से रोशनी पहुँचती है। यहां गाड़ियों और मोटरों आदि की आवाज नहीं सुनाई पड़ती और मालूम होता है कि जैसे हम प्राचीनता के केन्द्र में पहुँच गये हों और हमारा आधुनिक नगरों तथा बाज़ारों से कोई सम्बन्ध ही न हो।

केरो नगर की गंदी संकरी गलियां बड़े बड़े खांनो (मैदानों) के इधर उधर स्थित हैं। यह कच्ची हैं। इन्हीं स्थानों पर ऊंटों के काफिले सामान लाकर उतारते थे और बाज़ार लगता था। दूकानें क़तार में लगती थीं और उनका सामने का भाग गलियों की ओर होता था। यहीं पर अब भी बाज़ार प्राचीन ढंग से लगते हैं और भिन्न भिन्न के व्यापारी, अपनी पुकार तथा गंध द्वारा पहिचाने जाते हैं।

यहां यदि बाज़ार में किसी दूकान के सामने बेंच पर बैठ जाइये तो पूर्वी संसार का पूर्ण चित्र आंखों के सामने नाच जाता है। एक ओर ईरानी लोग काली

तुर्की टोपी लगाये घूमते हुये दिखाई पड़ते हैं तो दूसरी ओर हरा साफ़ा बांधे पास की किसी मसजिद का शेख दिखलाई पड़ता है। एक ओर जंगली बाल वाला ऊंट का व्यापारी नज़र आता है तो दूसरी ओर गाती हुई स्त्रियां (बिना बुर्क़ें वाली) जिनके मुखड़े रंगे हुये होते हैं और सोने-चाँदी के आभूषण पहने कहीं व्याह में भाग लेने जाती हुई दिखाई पड़ती हैं। भीख माँगने वाले अपने तबले, मंजीरे तथा खंभड़ी लिये भीख मांगते चले जाते हैं तो दूसरी ओर शर्बत बेंचने वाले अपने गिलास तथा प्याले खड़खड़ाते हुये पीने वालों को बुलाते नज़र आते हैं। पका हुआ माँस तथा मिठाई बेंचने वाले अपने अपने खोंचे लिये आवाजें लगाते चले जाते हैं। इस प्रकार भांति भांति के लोग बाज़ार में दिखाई पड़ते हैं।

कहरा मुसलिम संसार के प्रधान पवित्र नगरों में से एक नगर है। यहां के आलिम अपनी योग्यता के लिये प्रसिद्ध हैं। यहां की मसजिदें भी अपनी सुन्दरता, कला तथा ऐतिहासिक वर्णन के लिये अद्वितीय मानी जाती हैं। यहां कुल ३६६ मसजिदें हैं।

१५ कहरा-दर्शन

२२२८

प्राचीन फातिमा नगर में जहां बहुत सी गलियां आकर मिलती हैं वहीं संसार की सुप्रसिद्ध एल-अज़ार मसजिद है। यह मुसलमानी दुनिया में सर्वोत्तम विश्व-विद्यालय है। यहाँ १५ हज़ार से अधिक विद्यार्थी धार्मिक शिक्षा पाते हैं। यहां की मसजिद का शेख़ उन्हें अपने धर्मोपदेश का ज्ञान कराता है। यहाँ क़ुरान-शरीफ का अध्ययन कराया जाता है। यह मिस्री राष्ट्रीयता का घर है और अंग्रेज़ों के विरुद्ध अधिकांश विद्रोहों का श्री गणेश यहीं से हुआ है। यह स्थान अपने धर्म के कट्टरपन के लिये प्रसिद्ध है। इस कारण अन्य धर्म वालों को यहां सचेत होकर चलना पड़ता है। विश्वविद्यालय में कला, विज्ञान और कानून डाक्टरी सम्बन्धी शिक्षाएं भी प्रदान की जाती हैं। प्राचीनकाल में समस्त नगर में ६० द्वार थे उनमें से केवल अब तीन द्वार शेष रह गये हैं और बाक़ी सभी नष्ट हो गये हैं। यह तीनों प्राचीन द्वार फातिमा नगर की याद दिलाते हैं।

यद्यपि कैरो नगर में अब भी कुछ प्राचीन कारोबार के कारखाने चालू हैं पर मुख्य रूप से यहां दूसरे स्थानों से सामान मँगाकर भिन्न-भिन्न स्थानों में उसे वितरण करने का रोज़गार होता है। सिकंदरिया तथा पोर्ट सईद

बन्दरगाहों द्वारा यह नगर समुद्र से मिला हुआ है। यह मिस्र-योरुप, मिस्र भारत मिस्र-सूडान। तथा दक्षिणी अफ्रीकन हवाई मार्गों का प्रसिद्ध हवाई स्टेशन है।

यदि किसी ऊँचे स्थान अथवा मीनार पर खड़े होकर संध्या समय सूर्यास्त में नगर का अवलोकन किया जाय तो कैरो, खलीफों और क्रोमरों तीनों मिस्रों का दर्शन मिल जाता है। तात्पर्य यह कि तीनों कालों की सभ्यता, कला-कौशल अब तक क़हरा नगर में वर्तमान है उस समय नगर का दृश्य बड़ा ही रमणीक प्रतीत होता है।

अधिक दूरी पर प्राचीन मक़बरे और पिरेमिड मरुस्थल के किनारे आन-बान के साथ दिखलाई पड़ते हैं। दूसरी ओर लाल पहाड़ियां दिखलाई पड़ती हैं और नील नदी अपना टेढ़ा-घुमावदार मार्ग बनाती हुई दृष्टिगोचर होती है। सामने विशाल क़हरा नगर दिखाई पड़ता है जिसके विशाल भवनों की पीली तथा श्वेत छतें शोभायमान होती है और उनके मध्य मीनारें गुम्बद तथा छतरियां आदि उठी हुई सुन्दर शोभायमान दिखाई पड़ती हैं।

कहरा-दर्शन

उस समय मोहम्मद अली की मसजिद की मीनारों के मध्य से तथा दूसरी मसजिदों से संध्या की नमाज की अजान सुनाई पड़ती है। उसके पवित्र उत्तर में ब्रिटिश बस्ती से बिगुल की कर्तल सुरीली ध्वनि गूंज उठती है।

मिस्र की जागृति की मूर्ति

स्टेशन से उतर कर कहरा नगर प्रवेश करते ही सर्व प्रथम मिस्र की जागृति की मूर्ति के दर्शन होते हैं। यह मूर्ति बेबुल हदीदस्क्वाएर में बृटिश सैनिक पुलिस बैरेक के सामने है। जब यह मूर्ति बनी तो इस पर बहुत टीका टिप्पणी हुई। कुछ लोगों ने इसकी प्रशंसा की, कुछ लोगों ने इसका तिरस्कार किया। कुछ भी हो यह मिस्र की जागृति की प्रतिमा है।

इस मूर्ति का निर्माण मोहम्मद मोखतार नामक शिल्पकार ने किया था। इसके बनाने तथा स्थापित करने में ६ साल लगे थे। जिन शिलाओं से काट कर यह मूर्ति बनाई गई थी वह अस्वान से लाए गये थे और प्रत्येक शिला २० से ४५ टन तक वज़नी थीं।

मिस्र को एक देवी के रूप में परिणित किया गया

है। देवी का एक हाथ उस स्फिनिक्स के सिर पर है जो झुकी हुई दशा से उठ रहा है जब कि देवी अपने घूंघुट को खींच रही है।

गत महायुद्ध के पश्चात् मिस्र में जो सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक जागृति उत्पन्न हुई है उसी भाव का इस मूर्ति द्वारा प्रदर्शन किया गया है। पहले की गिरी दशा से उसे उन्नति की ओर अग्रसर होता दिखाया गया है।

हेलियो पोलिस दौड़ क्लब

हेलियोपोलिस नामक दौड़ वाली संस्था यहां की मुख्य तथा प्राचीन खेल कूद वाली संस्था है। इसका उद्घाटन १६०८ ई० में हुआ। अब यह संसार के सर्वोत्तम दौड़ वाली संस्थाओं में से है। यहां पर खड़े होने, बैठने आदि के लिये बड़े ही सुन्दर स्थान बनाये गये हैं। निजी लोगों ने भी अपने अपने स्थान बनवा लिये हैं। बार तथा रिस्टोरेंट आदि भी बन गये हैं जिससे हेलियो पोलिस की शान-शौकत कहीं अधिक बढ़ गई

है। अब यह संसार के नवीनतम रेसिंग क्लबों में से है। यहां जुए का प्रबन्ध 'पारी-म्यूचुअल' द्वारा होता है। दौड़ की ऋतु में प्रत्येक रविवार तथा अंतरे शनिवार को दौड़ हुआ करती है। दौड़ के मैनेजर तथा मंत्री मिस्टर ए० पी०' फ्रींड हैं।

स्त्रियों तथा पुरुषों दोनों के लिये यहां सुयोग्य स्थान बैठने तथा खड़े होने के लिये बने हुये हैं नगर के प्रत्येक भाग से यहां आने के लिये हेलियोपोलिस की बिजली की मोटरें चलती हैं।

गेज़ीरा दौड़ें

इसी क्लब की संरक्षता में प्रत्येक अंतरे शनिवार को गेज़ीरा स्पोर्टिंग क्लब की मीटिंगें हुआ करती हैं। देखने वालों के लिये प्रत्येक भांति की सुविधा रहती है। पारी-म्यूचुअल तरीक़े पर जुआ होता है। गेजीरा जाने के लिये लोगों को मोटर, ट्राम तथा चारवांक्स आदि गाड़ियां मिलती हैं। यहां का प्रबन्ध यहां के मंत्री तथा कोषाध्यक्ष की देख रेख में होता है।

आपराघर

प्रत्येक भांति के मनुष्य के आमोद-प्रमोद के लिये क़ाहरा नगर में प्रबन्ध है। यद्यपि नगर में दैनिक थियेटर तथा नाच-गान का प्रबन्ध नहीं है जैसा कि योरुपीय राजधानियों में होता है फिर भी समस्त वर्ष यहां लोगों के आमोद-प्रमोद के लिये कुछ न कुछ प्रबंध रहता है।

ऋतुकाल में आपरा हाऊस (नाचघर) गौंड आपरा के लिये प्रयोग होता है। जहां फ्रांसीसी सुखांत नाटक तथा कभी कभी अंग्रेज़ी खेलों का प्रदर्शन होता है।

राएल आपरा हाऊस की स्थिति कांटिनेनटल सेवाय होटल के सामने है। यह मिस्र के ग्रैंड आपरा का केन्द्र है। यहां ऋतु फ्रांसीसी तथा इटैलियन आपरा का प्रदर्शन होता है।

इस आपरा घर की नीव इस्माइल पाशा ने सन् १८६६ ई० में डाली थी जब कि स्वेज़ नहर के खोलने का उत्सव मनाया जा रहा था। अवोस्कानी नामक प्रसिद्ध शिल्पकार की देख रेख में यह ५ महीने के अल्पकाल में ही तैयार किया गया था। आपरा घर से मिला हुआ

संगीत-पुस्तकालय है। जिसमें ८०० पुस्तकें हैं। इसके अतिरिक्त थियेटर कला के इतिहास की भी पुस्तकें हैं।

अरबी थियेटर

रेमज़ेज, ब्रिटानिया और मैजेस्टिक आटिनाकालय स्थान शहरिया एमादुलडाइन पर स्थित है। इन नाटक-घरों में अरबी खेलों का प्रदर्शन होता है। एज़बेकिया वाटिकाओं में भी एक छोटा सा नाटक घर है यह सर्व प्रथम अरबी खेलों के बनाने के लिये निर्माण किया गया था पर अब खास कर सिनेमा के खेल होते हैं।

कुर्साल

शारिया एमादुलडाइन पर कुर्साल स्थित है। यह एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था है और प्रमुख योरुपीय कलाकार तथा कम्पनियां यहां कर्मशील हैं। यहां पर साधारण नाच-गान के खेल हुआ करते हैं। कुर्साल लगभग साल भर खुला रहता है और फ्रांसीसी, यूनानी और इटैलियन आदि सुन्दर खेल यहाँ बनते हैं। कभी कभी

यहां अंग्रेज़ी कम्पनी भी अंग्रेज़ी खेल तय्यार करने आ जाती है।

सिनेमा घर

कहरा नगर में बहुत से सिनेमा घर हैं जिनमें प्रधान बाज़ार में स्थित सिनेमा घर प्रसिद्ध हैं। यह एमादुल-डाइन तथा शारिया फाऊद में स्थित हैं। अमरीकन काज्मोग्राफ, एम्पाएर सिनेमा, गौमोंट पैलेस, पेरिस, ट्रिओम्फे, जोसी, रोयेफाऊद, टेल, बुस्टन, मेट्रोपोले आदि सिनेमा घर नगर में स्थित हैं।

पेलोटे बास्क्वे

पेलोटे स्थान आमोद-प्रमोद के लिये प्रसिद्ध स्थान है यहां १० बजे रात से २ बजे प्रातःकाल तक खेल होता है। टोटालिसेटर खेल में बाज़ी लगाने का प्रबंध करते हैं। जिन व्यक्तियों ने पेलोटे बास्क्वे का खेल नहीं देखा है उन्हें चाहिये कि यदि उन्हें अवसर प्राप्त हो तो वह उसे अवश्य देखें क्योंकि यह खेल संसार में बड़ा ही

चतुरता का खेल है और बड़ा ही मनोरंजक होता है। बाल गेमों (खेलों) में यह राजा माना जाता है। इस खेल का नाम करण बास्क्वे देश पर हुआ है। बास्क्वे देश प्रेनीज़ में स्थित है। वहां के आदि निवासी इसे मनबहलाव के हेतु खेला करते हैं। क्यूबा में भी यह खेल बहुत प्रचलित है पर इङ्गलैंड में इसका खेल नहीं होता है। खेल होते समय बाल (गेंद) जितनी तेज़ी से चलता है उसे आंख से देखना भी असम्भव हो जाता है।

———

नाच

नाचने का रिवाज कहरा में बहुत है। प्रत्येक सप्ताह में एक रात्रि को नाचने का कार्यक्रम प्रत्येक होटल में होता है। शेपर्डस, सेमीरामिस सेवाय, कांटिनेंटल तथा मेनाहाऊस आदि स्थानों पर सप्ताह में एक रात्रि को खास तौर पर नाचने का कार्यक्रम रहता है। होटलों में नाच-भोज का कार्यक्रम थोड़े मूल्य पर ही दिया जाता है। ऋतु के समय नेशनल होटल में भी नाच हुआ करते हैं।

———

कैबारेट्स

भांति भांति के रेस्टोरेन्टों तथा खुले काफी घरों में यह तमाशे हुआ करते हैं। ग्रीष्म ऋतु में कित-कत क्लब इस तमाशे के लिये बहुत प्रसिद्ध है। ऋतुकाल में पेरोक्वेट जो उत्तम श्रेणी का कबारेट तमाशा माना जाता है नैशनल होटल में प्रत्येक रात्रि में हुआ करता है।

शेपडेड़स होटल

आधुनिक कहरा का वर्णन करते हुये इस होटल का वर्णन बड़ा आवश्यक है। यह होटल संसार के उत्तमतर होटलों में माना जाता है। जिस प्रकार कहरा जाने वालों को स्फिनिक्स तथा पिरोमिडों को देखना आवश्यक है उसी भांति उन्हें इस होटल का देखना भी आधुनिक युग में नितान्त आवश्यक है।

शेपर्डस होटल ,का वर्णन उपन्यासों, कहानियों यात्राओं, तथा अन्य दूसरी प्रकार की पुस्तकों में आता है। आज यह एक होटल से बढ़कर कुछ और अधिक

महत्व रखता है क्यों बहुधा यहां एतिहासिक घटनाएँ घट जाती हैं। यहां पूर्वी तथा पश्चिमी सभ्य देशों के लोग जिसमें साधारण, मध्ययम तथा उच्च श्रेणी के लोग होते, प्रायः ठहरते हैं और आपस में विचार विनमय करते हैं। यहां पर बड़े बड़े हाल बने हुये हैं जहाँ लोग एकत्रित होते हैं और एक दूसरे से परिचय करते कराते हैं।

सन् १८४१ ई० में सर्व प्रथम यह होटल खोला गया था। यह घटना स्वेज़ नहर के खुलने के २८ वर्ष पूर्व की है जब योरुपीय शक्तियों ने मोहम्मद अली और तुर्की सम्राट के बीच झगड़े का निपटारा किया था और सदैव के लिये मोहम्मद अली के वंश को मिस्र का शासन सौंपा गया था।

उस युग में योरुप से भारत तथा पूर्वी देशों को आने में महीनों का समय लग जाता था इसलिये मार्ग में उन्हें केरो नगर में अवश्य ही विश्राम करना पड़ता था। पहले केरो से स्वेज नहर की यात्रा कारवां द्वारा समाप्त की जाती थी। योरुप तथा पूर्वी देशों के मध्य व्यापारिक घनिष्ट सम्बन्ध होने के कारण सदैव यात्रियों का समूह आता जाता रहता था।

उस समय आधुनिक एज़बेकी वाटिकाओं के स्थान पर एज़बेक नामक झील थी। इस झील का नाम करण अमीर एज़बेक के नाम पर हुआ था जो तुर्की सुल्तान बयज़िद के मार्ग का कांटा सा था। यह बात पंद्रहवीं सदी के अंत की है। अमीर एज़बेक की वहां एक मसजिद बन गई है। यहीं पर शेपर्ड नामक एक अंग्रेज़ ने शेपर्ड होटल की नींव डाली जो आज भी उसी के नाम से प्रसिद्ध है। उस समय यह होटल एक घर में खोला गया था होटल खोलने का मुख्य कारण यह था कि भारतवर्ष तथा पूर्वी देशों के आने वालों के लिये ठहरने का स्थान बनाया जाय। मिस्टर शेपर्ड ने इसका नाम 'दि न्यू बृटिश होटल' होगया। जिस वर्ष यह होटल खोला गया उसी वर्ष यह इतना सफल हुआ कि मिस्टर शेपर्ड ने उसे छोटे घर से इसे हटाकर वर्तमान स्थान में एक बड़े घर में कर दिया। यह भवन शहज़ादी जीनब का महल था। ज़ीनब मोहम्मद अली पाशा को पुत्री थी और पहले यहाँ भाषा सम्बन्धी शिक्षा प्रदान करने की पाठशाला थो। इस स्थान का सम्बन्ध ऐतिहासिक

घटनाओं से भी है। जब नेपोलियन मिस्र से वापस लौटा तो वह फ्रांसीसी सेना को जनरल क्लेबेर की संरक्षता में छोड़ गया जिसे किसी ने वहीं एक वृक्ष के नीचे कत्ल कर दिया था। जिस वृक्ष के नीचे हत्या हुई थी वह अब भी वर्तमान है। क्लेबेर ने इसी स्थान को अपना केन्द्र बना रक्खा था। वृक्ष शेपर्ड्स होटल की भूमि में ही है। जिस स्थान पर जनरल क्लेबेर चोट खाकर गिरा था वहां पर अब होटल के मैनेजर का आफिस है।

१८३१ ई० तक होटल पर मिस्टर शेपर्ड्स का अधिकार रहा उसके पश्चात् मिस्टर जेच ने उसे ले लिया। मिस्टर जेच के उत्तराधिकारियों ने १८६१ ई० में होटल को फिर से बनवाया था।

यह बात याद रखने की है कि उन दिनों आधुनिक केरो की सत्ता का निर्माण हो रहा था। आज जहां बाज़ार तथा चौक अथवा स्क्वाएर तथा ट्रमवे टरमिनस आदि हैं वहीं पर उस समय विदेशी लोग रहा करते थे। प्रत्येक रात को इस स्थान के प्रवेश द्वार पर ताला बन्द करने के पश्चात् जो विदेशी बाहर रह जाते थे

उनके जान व माल की जिम्मेदारी सरकार नहीं लेती थी। उस मनाही वाले क्षेत्र में अब भी वह प्राचीन भवन वर्तमान हैं जहां पर काउंसलेट आदि स्थापित थे। यात्रियों के लिये उस समय ठहरने के लिये स्थान मिलना बड़ा कठिन था। अतः जब शेपर्ड्स होटल की स्थापना हुई तो उससे यात्रियों को बड़ा लाभ हुआ और जंगल में उसने मंगल कर दिया। होटल के नीचे फर्श वाले मार्गों में अब भी एक लटकते चबूतरे का चित्र उस समय (१८६३) का है जिससे सिद्ध होता है कि उस समय यात्रियों को कितने बड़े संकट का सामना करना पड़ता था।

उस समय वहां के खोंचे वाले, दलाल तथा गदहे वाले लड़के यात्रियों की दुर्दशा कर डालते थे सवारियाँ भी उस समय अजीब थीं जिनसे यात्रियों को महान कष्ट मिलता था। आज टैक्सी मोटरें तथा बग्घियाँ होटल तक लाने और ले जाने के लिये मिलती हैं। मार्ग प्रदर्शक होटल के बाहर आदरपूर्ण भाव से मिल जाते हैं और नियमानुसार चार्ज लेते हैं। खोंचे वाले भी अपने नियत स्थानों पर रहते हैं। १८६१ ई० से अब तक में

होटल अपने का चौगुना बढ़ गया है। १८९९, १९०४, १९१९ तथा १९२७ में इसकी बृद्धि की गई। शीघ्र ही इसकी वृद्धि पुनह करनी पड़ेगी क्योंकि यह धार्मिक यात्रियों की भीड़ दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

किसी व्यापारिक स्थान की आने जाने वालों की हस्ताक्षर वाली पुस्तक इतनी मनोरंजन न होगी जैसी कि शेपर्ड्स होटल की है। १८४९ ई० तक के यात्रियों के हस्ताक्षर पुस्तक पर मिलते हैं जिनमें प्रत्येक राष्ट्र के असंख्य लोगों के हस्ताक्षर हैं। भारतीय विप्लव वादियों, अफ्रीका की खोज करने वालों, संसार तथा ध्रुव की यात्रा करने वालों जैसे स्टैनली, रूजवेल्ट, मेजर विस्मैन, टेलके और पीटर्स आदि के हस्तक्षर हैं। स्टैनली ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'एमिन पाशा की रिलीफ' नामक पुस्तक यहीं एक कमरे में लिखी थी।

विजिटर पुस्तक में शाही घरानों के लोगों, बड़े बड़े संसार के समस्याओं, राजनीतिज्ञों, कूटनीतिज्ञों, भाषा के पंडितों, अर्थ शास्त्र के पंडितों तथा दूसरे प्रसिद्ध लोगों के हस्ताक्षर हैं।

स्वेज नहर के खुल जाने के पश्चात् केरो नगर का महत्व और भी अधिक हो गया और यह योरुप

तथा पूर्वी देशों के मध्य हवाई केन्द्र हो गया इससे और अधिक यात्री यहाँ आने लगे। आज कल कारवां वाले दिनों की याद विलक्षण सी प्रतीत होती है किन्तु शायद कुछ ही लोग उस समय की गर्द तथा संकटों की सराहना करें। यद्यपि आधुनिक यात्रा गमना-गमन के सुगम साधनों के कारण बड़ी ही सरल तथा आनन्द दायक हो गई है फिर भी थकावट आही जाती है। इसलिये जब यात्री शेपर्ड्स होटल के सुसज्जित कमरों में पहुँचते हैं तो उन्हें अपार आनन्द का अनुभव प्राप्त होता है। यहां के कमरे गद्दे तथा सोफों से सुसज्जित बिजली की बत्ती तथा पंखों से शोभायमान हैं। इसी प्रकार की आधुनिक सुविधाएँ प्राप्त की गई हैं। लगभग प्रत्येक सोने के कमरे से एक नहाने का कमरा जुड़ा हुआ है। यहाँ के कमरों को लंदन, न्यूयार्क तथा पेरिस जैसा सजाया गया है।

होटलों की उन्नति तथा अवनति होती ही रहती है। कुछ होटल कुछ समय तक प्रसिद्ध रहते हैं उसके पश्चात् उनका नाम मिट जाता है। दूसरे कोई होटल अपने भव्यता तथा अधिक व्यय अथवा सुस्ती या नौकरों की

अच्छाई या बुराई के हेतु प्रसिद्ध होते हैं पर शेपर्ड्स होटल की महानता समय के साथ ही साथ और अधिक दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है और इतिहास के पन्नों में उसकी प्रशंसा दिव दूनी रात चौगुनी होती जाती है।

ग्रोपी के रेस्टोरेंट का जीवन

एम० जे० ग्रोपी ने सिकन्दरिया में अपना प्रथम कार्य १८६० ई० में स्थापित किया था। उसके पश्चात् १६०३ ई० में उसी नगर में शारिया शरीफ पाशा में उसने अपना दूसरा रेस्टोरेंट स्थापित किया। उसके पश्चात् १६०६ ई० में वह केरो नगर आया और वहां शारिया-मानख में उसने अपना तीसरा रेस्टोरेंट स्थापित करने का विचार किया। अपनी योग्यता तथा सुप्रबन्ध के कारण थोड़े काल में ही उसने अपनी ख्याति प्राप्त करली और केरो राजधानी में रेस्टोरां का नाम प्रसिद्ध हो गया। आज कल मिस्र में इस रेस्टोरां का वही स्थान प्राप्त है जो कि योरुप के प्रसिद्धतम रेस्टोरांओं को है। उनकी तुलना में समानता रखता है और किसी प्रकार कम नहीं है। शयन, विश्राम और भांति भांति के सामान तैयार करने में उन्हीं की समानता रखता है।

ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय रेस्टोरां के स्थापित करने का गौरव एम० जे० ग्रोपो को ही प्राप्त है। यहां योरुपीय तथा पूर्वी सभ्यता दोनों का समानता के साथ मिश्रण है।

रेस्टोरां के भवन में समोसा, कचौड़ी, नमकीन तथा मिठाई की भी एक दूकान है जहां यह वस्तुएं बिका करती हैं। इस दूकान को इसके मालिक ने भोजन सामग्री की खान बना दिया है।

मिस्र में मिदान सोलिमानपाशा की आनन्दमयी शाखा कला कौशल का कारीगरी का अद्भुत उदाहरण है। यह अपने ढंग में समस्त मिस्र में अद्वितीय है। इसकी सजावट का काम एम० गैलेट ने किया है। वह पेरिस में एकोल्ले बोले में शिल्पकला का प्रोफेसर था। कारीगर ने वेनिस की कला का प्रयोग किया है और प्रत्येक भांति की मिट्टी तयार की है साथ ही सुन्दरता भी उत्पन्न करदी है। खिड़की, द्वार, भट्टी, रोशनदान, झंझरियां आदि का समावेश ऐसा किया गया है कि सुन्दरता और अधिक बढ़ गई है। यहां प्रत्येक भांति के

सामान के रखने के लिये ऐसे बरतनों तथा स्थानों का समावेश है कि कोई सामान खराब नहीं हो सकता है।

रोटुंडा संसार के सुन्दरतम नाच वाले कमरों में से है। इस हाल की छत शीशे के टुकड़ों से बनाई गई है जो बड़ी ही सुन्दर है। इसका निर्माण फ्रांसीसी कलाकार जियानिन ने किया था।

यहां नाच गान करने वाली पार्टियां योरुप से चुन चुन कर बुलाई जाती हैं और वह संध्या समय अथवा चाय-पानी के समय अपना अभिनय करती हैं। रेस्टोरां से मिली हुई एक सुन्दर बाटिका है जो अपनी सुन्दरता में वेनिस की बाटिकाओं की तरह है। यहां प्रत्येक संध्या को बिना टिकट के सिनेमा का एक शो दिखलाया जाता है। इस बाटिका की सुन्दरता तथा आनन्द का वर्णन करने की अपेक्षा यही कहना ठीक है कि यहां आने वालों को उसका आनन्द अवश्य ही लेना चाहिये।

लिमोनिया का रेस्टोरां

यह रेस्टोरां शीरिया कसरूल-नील नामक स्थान पर स्थित है। यहां पर मुख्यतः अंग्रेज़ तथा अमरीकन

लोग आते हैं। यहाँ पर बड़ा ही सुन्दर भोजन मिलता है और भोजन सामग्री में किसी प्रकार की भी कमी नहीं रहती है। यहाँ पर एक बड़ी ही सुन्दर चाय-वाटिका है और प्रत्येक संध्या को नाच हुआ करता है। यहाँ नाच-गान करने वाले व्यक्ति केरो के चुनिन्दा व्यक्ति हुआ करते हैं। अच्छी से अच्छी शराब यहाँ कम से कम मूल्य में प्राप्त हो जाती है। खास खास कलाकार समय समय पर नाच-गान का अभिनय कराया करते हैं।

साल्ट्स

साल्ट्स के दो रेस्टोरां हैं एक शीरिया फाऊद प्रथम में और जो दूसरा शीरिया कसरुल नील में है यह दोनों स्थान अंग्रेज़ों तथा अमरीकनों के बीच में भली भाँति प्रसिद्ध हैं। यहाँ उत्तम श्रेणी का भोजन दिया जाता है।

सेंट जेम्स

सेंट जेम्स रेस्टोराँ शारिया फाऊद प्रथम में स्थित है। यह प्रसिद्ध रेस्टोरां तथा बार केरो के सर्वोत्तम

तथा प्राचीन रेस्टोरां में से है। जब कभी कोई व्यक्ति अपनी एक रात्रि घर के बाहर व्यतीत करने का इरादा करता है तो उसका अर्थ यही समझा जाता है कि वह 'जिमी' में रात्रि का भोजन करेगा। यहाँ के जैसा भोजन शायद ही केरो के किसी दूसरे रेस्टोरां में उपलब्ध होता हो।

कुछ जानने योग्य बातें

केरो का भ्रमण चाहे आनन्द के हेतु किया जाय या व्यापार के लिये किया जाय यात्रियों को चाहिये कि वह जिन वस्तुओं या कार्यों से घृणा करते हैं उन्हें देख कर अप्रसन्नता प्रकट न करें और न उनमें त्रुटि निकालें क्योंकि ऐसा करने से बेकार बहस खड़ी होने का भय रहता है और किञ्चित मात्र भी लाभ नहीं होता है। मिस्र में सैकड़ों वस्तुएँ ऐसी भी हैं जिनमें सुधार होने की आवश्यकता है। सैकड़ों वस्तुएँ ऐसी भी हैं जिनके अवलोकन से आनन्द मिलता है और सैकड़ों वस्तुएँ ऐसी भी हैं जिन्हें देख कर हँसी आती है। मिस्र एक ऐसा देश है जहाँ बेपरवाही दिखाते हुये

प्रत्येक वस्तु का अवलोकन करना अधिक उचित है। यदि एक तत्वशास्त्री की भांति वस्तुओं का निरीक्षण किया जाय तो और अधिक आनन्द प्राप्त होता है।

सर्व प्रथम मिस्र में प्रवेश करने पर अन्य देशों की भाँति रुपये पैसे का ज्ञान होना अति आवश्यक है। यहां का सब से छोटा मुद्रा मिलेम में है। यह लगभग एक दमड़ी अथवा पैसे के चौथाई के बराबर होता है। जैसे हम लोग अपने देश में दमड़ी को कभी भी प्रयोग नहीं करते वैसे हो इसका भी प्रयोग मिस्र में नहीं होता है। दूसरा मुद्रा पियास्ट्र कहलाता है यह लगभग ढाई पेंस के बराबर अर्थात् लगभग ढाई आने के बराबर होता है। इससे छोटे मुद्रे को आधा या छोटा पियास्ट्र कहते हैं। १०० पियास्ट्र का एक मिस्री पौंड होता है। यह लगभग पंद्रह रुपये चार आने के बराबर होता है। इसलिये दूकानदारी करने के पूर्व इन बातों का ध्यान कर लेना बहुत आवश्यक है। मिस्र में चालू मुद्राओं का जानना भी ज़रूरी है वहाँ एक पौंड का नोट चलता है। इसके अतिरिक्त बीस, दस, पांच और दो पियास्ट्र के चांदी के मुद्रा चलते हैं। चांदी के मुद्रों में सबसे

छोटा पियास्ट्र है जो हमारे यहां की चवन्नी से कुछ ही मूल्य में अधिक होता है। इसके अतिरिक्त एक आधे पियास्ट्र के निकल के मुद्रा चालू हैं। मिलेम और आध-मिलेम के सिक्के कांसे के बनाए जाते हैं।

जब पोर्ट सईद अथवा सिकन्दरिया बन्दरगाह पर उतरते हैं तो लोगों की छान बीन की जाती है। बन्दरगाह पर उतरते ही सामान तथा बोझ की जाँच होती है यद्यपि भ्रमण कारी यात्री की छान-बीन कम होती है और अधिकारी गण उनके साथ बड़ा ही सुन्दर सरलता का व्यवहार करते हैं। इन बन्दरगाहों पर भ्रमण करने वाले यात्री टूरिस्ट एजेन्सियों के मार्फत अपना सामान छोड़ सकते हैं।

सिकन्दरिया बन्दरगाह में घाट के बगल ही में रेलवे स्टेशन है जहाँ यात्रियों को केरो पहुँचाने के लिये रेलगाड़ियाँ खड़ी मिलती हैं। यहाँ से प्रतिदिन सात एक्सप्रेस गाड़ियाँ केरो को जाया करती हैं। यात्रियों को चाहिये कि केरो जाने के पूर्व वे सिकन्दरिया नगर को दो-एक दिन ठहर कर देख लें। यह मिस्र की व्यापारिक राजधानी है और यहाँ बहुत सी देखने योग्य वस्तुएं हैं।

पोर्ट सईद से केरो के लिये बहुत कम स्पेशल गाड़ियाँ जाती हैं। अतः यात्रियों को साधारण रेल गाड़ियों के लिये ठहरना पड़ता है। प्रतिदिन तीन रेल गाड़ियां पोर्ट सईद से केरो जाया करती हैं। पोर्ट सईद का स्टेशन नगर के बाहर स्थित है पर यात्रियों की सहायता के लिये काफी संख्या में मोटरें तथा गाड़ियाँ चला करती हैं।

मिस्र की यात्रा शीत काल में यदि की जाय तो बड़ा आनन्द मिलता है। इसलिये अधिकांश लोग वहां अक्तूबर के मास में पहुँच जाते है। अप्रैल का महीना भी यात्रा के लिये अच्छा होता है। १५ अक्तूबर से यहां का तापक्रम घटने लगता है। नवम्बर का महीना बड़ा ही सुहावना रहता है और इसी समय अधिकांश पश्चिमी देशों के लोग यहां घूमने आया करते हैं। जनवरी मास में यहाँ सब महीनों से अधिक सरदी पड़ती है। पर जनवरी मास में केरो तथा उसके समीपवर्ती स्थानों का ताप ५७ डिग्री रहता है। मिस्र की शीत काल की रातें बड़ी सुहावनी होती हैं पर वे धोका देने वाली होती हैं। इसका मुख्य कारण मरुस्थल है।

वहाँ दिन में गरमी पड़ने लगती है तो बहुधा लोग साधारण कपड़े पहिन कर बाहर चले जाते हैं पर यदि लौटने में देर हो गई और रात को लौटे तो सरदी के कारण उन्हें कष्ट मिलता है। जैसे जैसे रात्रि अधिक व्यतीत होती जाती है वैसे वैसे सरदी भी बढ़ती जाती है। बहुधा संध्या समय गरमी रहती है इसलिये विदेशी लोग अपनी चारपाई पर ओढ़ने का वस्त्र बिना ही रक्खे विश्राम करने लगते हैं पर रात्रि में सरदी इतनी अधिक हो जाती है कि फिर वह सहन नहीं की जा सकती। इसलिये वहाँ विदेशियों को सदैव सचेत रहना पड़ता है अन्यथा सरदी लग जाने का भय रहता है। जैसे हमारे यहां कुँवार तथा कार्तिक मास की चाँदनी रात में लोग ताजमहल देखने जाते हैं उसी प्रकार केरो में लोग इन्हीं दिनों इन्हीं रातों में पिरेमिड देखने जाते हैं। केरो में उन्हें कम सरदी लगती है पर जब वह मरु-स्थल के मध्य पिरेमिड पहुंचते हैं तो यदि गरम वस्त्र उनके पास न हुये तो वह बुरी तरह परेशान होते हैं और पिरेमिड देखने का सारा मज़ा जाता रहता है। मरुस्थल का ताप दिन में बढ़ जाता है और सूर्यास्त के पश्चात् सरदी पड़ने लगती है आधी रात के बाद कड़ी सरदी पड़ती है।

शरीर का तापक्रम उष्ण प्रदेशों में शीघ्र ऊँचा नीचा होता रहता है इसलिये शरीर पर आवश्यक वस्त्र धारण करना चाहिये जिससे शरीर को सुख मिले और ठंड अथवा गरमी लगने का भय न रहे। मिस्र जैसे उष्ण प्रदेश में यदि अधिक गरम कपड़े धारण कर लिये जाते हैं तो दिन की गरमी में शरीर पसीने से तर हो जाता है। इस कारण ऐसे वस्त्र दिन में पहिनना चाहिये जिससे पसीना सूख सूख कर वस्त्र के बाहर उड़ता रहे। रात्रि में उसके विपरीत गरम कपड़े धारण करना चाहिये जिससे सरदी लगने का भय न रहे।

मिस्र प्रदेश में लू तथा कड़ी धूप से भी बचने की आश्यकता है। बहुधा लोग कड़ी धूप के शिकार होकर अस्वस्थ हो जाते हैं। केरो आदि नगर में घूमते समय अथवा वहाँ से बाहर जाते आते समय लोगों को अपनी आंखों को सुरक्षित रखना नितांत आवश्यक है क्योंकि बालू के कणों से आंख में कष्ट उत्पन्न होने का बहुधा भय रहता है। लोग अधिकतर ऐनक का प्रयोग किया करते हैं और गुलाब जल आदि से रोज़ाना आंख धोया करते हैं। यहाँ दाँतों की सफ़ाई भी बड़ी ज़रूरी है

क्योंकि उष्ण प्रदेश में दाँतों में विसांद शीघ्र हो पैदा हो जाती है। कम से कम एक बार स्नान करना भी यहाँ बहुत ज़रूरी है जिससे शरीर पसीने और गर्द की मैल से स्वच्छ हो जाय। शीतल जल से नहाना अधिक उपयोगी है।

मिस्र में कीड़े मकोड़े बहुत हैं। जिस प्रकार लोग प्लेग से भयभीत रहते हैं वैसे वहाँ कीड़े मकोड़ों से डरते हैं। ये बड़े ज़हरीले भी होते हैं और इनके डांस से दर्द तथा अधिक कष्ट होता है पर साथ ही साथ वहां के हकीमों तथा डाक्टरों ने उससे बचाव के लिये औषधियां बना ली हैं जिनको डांसे हुए स्थान पर मल देने से शीघ्र ही आराम हो जाता है और जलन शान्त हो जाती है।

केरो में जो विदेशी अरबी भाषा नहीं जानते हैं और नगर का ज्ञान उन्हें नहीं होता है तो उन्हें दुभाषिया अथवा पथ प्रदर्शक की आवश्यकता पड़ती है क्योंकि बिना किसी सहायक के वह न तो घूम सकते हैं और न कुछ सामान ही खरीद सकते हैं। दुभाषिया अथवा पथ प्रदर्शक का भार सदैव होटल के चौकीदार पर ही डालना चाहिए या टूरिस्ट एजन्सियों की सहायता

से लेना चाहिये। ऐसा करने से उसे वेतन तथा बख-शीश कम चुकानी पड़ती है अन्यथा धोका हो जाता है। बाज़ार या मार्ग में दुभाषिया को चुनाव से सदैव धोखा हो जाता है। केरो में ऐसे हज़ारों लोग हैं जो पथ प्रदर्शक तथा दुभाषिया का काम करते हैं और पैसे ऐंठ ऐंठ कर अपना जीवन निर्वाह करते हैं। मिस्री नव-युवक योरुपीय भेष भाव में मिलते हैं और अपने को वह विद्यार्थी कहते हैं और टूटी-फूटी अंग्रेज़ी बोल कर बहुधा यात्रियों के साथ हो जाते हैं और उनसे पैसे ऐंठ लेते हैं। यह लोग वास्तव में दलाल होते हैं जिनकी दलाली प्रत्येक स्थान, दूकान आदि पर पहले से निश्चित रहती है। योरुपीय दूकानों में दुभा-षिया की कोई आवश्यकता नहीं है।

मिस्र के नगरों में और खासकर केरो तथा सिक-न्दरिया नगर में दूकानदारी करने में बहुत सतर्क रहना पड़ता है। पहले तो दुभाषिया से बचना पड़ता है। फिर दूकानदार से बचना होता है। यहां के दूकानदार बड़े चतुर होते हैं और काफी या सिगरेट खरीदार को दूकान पर पहुँचते ही बड़े प्रेम से देते हैं जिससे खरी-

दार को उनकी चालाकी का शक न हो सके। दूकान-दार सदैव अपनी वस्तु का मूल्य असली मूल्य से दोगुना तीन गुना और चार गुना तक बतलाते हैं। इसलिये चतुर ग्राहक सदैव सचेत रहता है और वह मांगे हुये मूल्य का आधा या तिहाई दाम लगाता है और फिर दूसरी ओर बढ़ जाता है। परन्तु वह बार बार पुकारा जाता है और अंत में यदि ग्राहक ने कीमत न बढ़ाई तो उसे उतने ही में जितना उसने पहले कहा था मिल जाती है और यदि वह धोका खा गया तो फिर वह ठग जाता है। दूकानदारी करने और सामान खरीदने में बड़ा समय लग जाता है पर ग्राहक को सदैव ध्यान रखना चाहिये कि समय का ख्याल न करके उसे सौदा खरीदने में काफी समय लगाना चाहिये और ठीक तौर से सौदा तय करना चाहिये।

योरुपीय दुकानों तथा महल्लों में इतना कष्ट ग्राहक को नहीं उठाना पड़ता है। बड़ी बड़ी योरुपीय दूकानों पर वस्तुओं का नियत मूल्य लिखा रहता है और उसमें किसी प्रकार का धोका नहीं होता है। छोटी दूकानों पर जहां मूल्य नियत नहीं रहता और मूल्य कुछ अधिक

मांगा जाता है वहां सौदा तय करके ही सामान खरीदना अधिक उपयोगी होता है।

विदेशी लोगों को मिस्र के नगरों में और प्रायः केरो में घूमते, चलते, फिरते, उठते, बैठते यह ध्यान रखना नितान्त आवश्यक है कि वह किसी मिस्री व्यक्ति के प्रतिकूल तो कोई कार्य नहीं कर रहा है मिस्री लोग प्राकृतिक तौर पर बड़े अतिथि सत्कार करने वाले होते हैं। पर यदि उनके विरुद्ध कुछ कहा सुना गया या चिढ़ाया गया या आंखों से अथवा हाथों से विपरीत प्रदर्शन किया गया तो शीघ्र ही झगड़ा खड़ा हो जाता है। इसलिये बाज़ार में घूमते समय कभी भी छोटे से छोटे व्यक्ति को छोटे से छोटे कार्य में व्यस्त देखकर कभी टोकना नहीं चाहिये और न स्त्रियों की ओर घूर कर देखना ही चाहिये चाहे उनका भेष कितना ही बुरा और मैला कुचैला क्यों न हो।

केरो नगर का भ्रमण करने के लिये सर्वोत्तम साधन टैक्सी मोटर या गाड़ी है। केरो में इनका भाड़ा नियत है। इसलिये गाड़ीवान कभी अधिक भाड़ा भी नहीं मांगते पर यदि वह अजनबी जान लेते हैं तो

अवश्य ही भाड़ा अधिक मांगते हैं। वह बड़े ही भले मानुष सीधे और सरल स्वभाव के होते हैं और अपनी बोल चाल से वे यात्री को मोह लेते हैं। इसलिये यात्री को चाहिये कि वह उन्हें भाड़े से अधिक कभी न दे नहीं तो वह और अधिक लेने का उपाय करेंगे और दूसरे यात्रियों को उससे कष्ट मिलेगा।

केरो में एक किलो मीटर का गाड़ी का भाड़ा साढ़े तीन पियास्ट्र नियत है यदि यात्रा इससे कुछ कम है तो भी उतना ही चुकता करना पड़ता है। ४०० मीटर का भाड़ा एक पियास्ट्र है। घंटों के हिसाब से गाड़ी करना अधिक उपयोगी है पर यदि घंटों के हिसाब से गाड़ी रखना है तो कोचवान को पहिले ही बता देना चाहिए। एक घंटे का किराया १२ पियास्ट्र होता है। प्रथम घंटे के पश्चात् प्रत्येक चौथाई घंटे का किराया ढाई पियास्ट्र लिया जाता है। समस्त दिन का गाड़ी का किराया ८५ पियास्ट्र होता है। यह गाड़ियां प्राचीन ढंग की होती हैं पर कष्टदायक नहीं होती है। एक गाड़ी पर दो व्यक्ति बड़े आराम से यात्रा कर सकते हैं यदि आवश्यकता पड़े तो दो सीट और बढ़ाई जा सकती हैं पर ऐसा करने पर कष्ट दायक हो जाता है।

केरो नगर की सैर मोटर गाड़ियों द्वारा अधिक सरलता से की जा सकती है। इस तरह व्यय भी कम पड़ता है और समय भी कम लगता है। एक मोटर कार में चार व्यक्ति सरलता पूर्वक सैर कर सकते हैं। किराया एक किलोमीटर का ४ पियास्ट्र है उसके पश्चात् प्रत्येक ५०० मीटर का एक पियास्ट्र के हिसाब से किराया चुकता करना पड़ता है। इससे अतिरिक्त यदि भिन्न भिन्न स्थानों का किराया नियत है जिसे गाइड बुक (पथ प्रदर्शक पुस्तक) द्वारा निर्णय किया जा सकता है।

ट्रामवे गाड़ियां बिजली द्वारा केरो नगर में चलती हैं। ट्रामवे गाड़ियों में प्रथम तथा द्वतीय श्रेणी के दर्जे होते हैं। नगर ट्रामवे के हिसाब से कई खंडों में विभाजित है। एक खंड का प्रथम श्रेणी का किराया १० मिल्लेम और द्वतीय का ६ मिलीम है।

मस्जिदों को देखने की यदि इच्छा हो तो देख सकते हैं किसी प्रकार की मनाही नहीं है पर द्वारपाल को अवश्य ही कुछ दे देना चाहिये क्योंकि उसका जीवन इसी कमाई से चलता है। भीतर जाकर किसी प्रकार

का शोर न करना चाहिये और अदब तथा भक्ति के साथ निरीक्षण करना चाहिये।

जहाँ तक संभव हो सके यात्रियों को चाहिये कि फेरी वालों से सामान न खरीदें पर यदि खरीदें तो उसी नियम का पालन करे कि जितना दाम फेरी वाला मांगे उसका आधा दाम लगावें इस तरह सौदा करके सामान खरीदें।

मिस्र के बड़े नगरों में भीख मांगने वालों की बड़ी अधिकता है और हर समय वह यात्रियों को परेशान किये रहते हैं इसलिये यात्रियों को चाहिये कि वह 'अल्लाह' या 'मफीश फाका' शब्दों का उच्चारण करके अपनी जान बचावें। 'अल्लाह' शब्द उच्चारण करने का मतलब यह है कि ईश्वर तुम्हें देगा। 'मफीश फाका का अर्थ यह है कि रेजकारी पास में नहीं है। यदि भिखारी यह सम्बोधन सुनकर चल दे तो अच्छा है और यदि वह रेजकारी देने के लिए तत्पर हो जाय तो शीघ्र ही गाड़ी पर बैठकर उसे रास्ता बता देना चाहिये क्योंकि अगर रेजकारी लेने देने का बखेड़ा खड़ा किया गया तो फिर भिकारियों की भीड़ लग जाने की सम्भावना हो जाती है।

दान या बखशीश केरो में उतनी मात्रा में न करना चाहिये जैसा कि और देशों में किया जाता है क्योंकि ऐसा करने से रिवाज बिगड़ जाने का भय है। रेस्टोरेंटों में बिल का दसवां भाग बखशीश के तौर पर देने की रीति सी हो गई है। दूसरी छोटी दूकानों या काफी घरों में एक पियास्ट्र से अधिक न देना चाहिये। गाड़ी ड्राइवरों को एक या दो पियास्ट्र किराये से अधिक अलग से दे देना चाहिये इससे वे संतुष्ट हो जाते हैं।

अलाज़ार विश्वविद्यालय

चतुर्थ फातिमा-खलीफा के समय में अलाज़ार के विश्वविद्यालय मस्जिद का भवन बनाया गया था। इसका निर्माण ६७० ई० में आरम्भ हुआ और ६७२ ई० में यह बन कर तयार हुआ। उसके बाद यह कई बार बनाया गया पर फिर आदि काल का कुछ भाग अब भी शेष है। यहाँ १८६७ ई० में एक जनरल लाइब्रेरी स्थापित की गई जिसमें अब ६० हज़ार पुस्तकें हैं।

कहरा-दर्शन

विश्वविद्यालय में २५० शिक्षक तथा निरीक्षक है और ४ हज़ार से अधिक विद्यार्थी हैं। यह शायद सबसे प्राचीन विश्वविद्यालय है। इसकी नींव गौहर इब्न अब्दुल्ला ने दसवीं सदी ईस्वी में डाली थी जब कि उसने मिस्र की विजय समाप्त करली थी। वह फातिमा बंश के अल-मुईज़ शासक का प्रधान सेनापति था। उसके ४३ वर्ष बाद अल हकीम इब्नुल अज़ीज ने यहां से दूसरी मसजिदों में पठन-पाठन का कार्य हटा दिया था और उसके पश्चात् सलाउद्दीन गद्दी पर बैठा तो उसने अलाज़ार के विश्वविद्यालय को कृतई तौर से बन्द कर दिया। सौ वर्ष पश्चात् अली ज़हीर ने अला-ज़ार के भवन की मरम्मत कराकर कुछ नए भाग निर्माण किये और पठन-पाठन का कार्य आरम्भ किया। उसके पश्चात् विद्यालय के भवनों (हालों) आदि का विस्तार धीरे धीरे बढ़ता रहा। अब्बास-हाल सब से अंत में बना है। यह सुन्दरता में सर्वोत्तम भी है। इस अब्बास द्वितीय बनवाया है।

मिस्री विश्वविद्यालय

सर्व प्रथम १९०८ ई० में मिस्री-विश्वविद्यालय की नींव डाली गई। १९२३ ई० में शिक्षा-मंत्री द्वारा यह सरकारी अधिकार में कर ली गई और गिज़ा में विश्व-विद्यालय भवन बनाये गये और अभी दूसरे भवन बनाएं जा रहें हैं।

११ मार्च सन् १९२५ ई० को बर्तमान सरकारी विश्वविद्यालय खोला गया। यहां पर चार विभाग हैं कला विभाग, साइंस (विज्ञान) विभाग, औषधि विभाग तथा ला (कानून) विभाग।

अमरीकन विश्वविद्यालय

केरो में अमरीकन विश्वविद्यालय की स्थापना इस लिये हुई कि अमरीका और मिस्र में मित्रता का भाव बढ़े और अरबी तथा अंग्रेज़ी भाषी लोगों में अधिक निकटवर्ती सम्बन्ध स्थापित हो जाय। इसका मुख्य उद्देश्य मैत्री भाव बढ़ाने का था। साथ ही साथ देश को संस्कृति को ऊंचा बनाने और सिविल सर्विस के लिये लोगों को तयार करने की भी मांग थी।

विश्वविद्यालय का मिस्री लोगों ने शुभागमन किया क्योंकि अंग्रेज़ों, फ्रांसीसियों, अमोरीकनों तथा और दूसरी जातियों के आजाने से मिस्र के सामाजिक, मानसिक तथा राजनैतिक जीवन में एक नवीन जागृति उत्पन्न हो गई थी और अंग्रेज़ी शिक्षा की युवकों को नितान्त आवश्यकता थी। यूनिवर्सिटी का व्यय ट्यूशन फीस के अतिरिक्त मिस्रों की सहायता से चलता है। इसके भीतर चार विभाग हैं।

प्रथम विभाग में एक कालेज है जो बी० ए० और बी० एस सी० की उपाधियां प्रदान करता है ताकि वहां के विद्यार्थी योरुप तथा अमरीका में जाकर दूसरी उच्च शिक्षाएं प्राप्त करें और नए रोज़गार कर सकें। दूसरे विभाग में ओरियंटल (आदि शिक्षा) स्कूल है। यहां आधुनिक तथा प्राचीन अरबी की शिक्षा प्रदान की जाती है। साथ ही साथ अरबी, संस्कृत तथा धार्मिक शिक्षा भी प्रदान की जाती है। तीसरा विभाग शिक्षा प्रसार है जहां राष्ट्रीयता तथा देश की भलाई के कार्यों की शिक्षा दी जाती है। चौथा विभाग भाषा सम्बंधी है जिसमें केवल भाषाओं की शिक्षा दी जाती है।

यहां बाहरी यात्रियों के आने जाने तथा देखने का पूर्ण रूप से अवसर दिया जाता है और किसी प्रकार की मनाही नहीं है। यह विश्वविद्यालय ११३ शारया कसरुल ऐनी पर स्थित है। यहां यह एक शाही महल था। इसका सीढ़ी मार्ग मूरिश कला का बना हुआ है। नवी ओडीटोरियम कदाचित् केरो नगर में सर्वोत्तम हाल है जिसे लोग देखने जाया करते हैं।

मिस्री (म्यूज़ियम) अजायबघर

आधुनिक मिस्री म्यूज़ियम भवन कसरडह-नील बैरेक के समीप शारिया मारीटे पाशा में स्थित है और वहाँ मिस्री सरकार के प्राचीन वस्तुओं का संग्रह है।

प्राचीन वस्तुओं का सर्व प्रथम अजायबघर अगस्ते मारीटे पाशा नामक फ्रांसीसी द्वारा १८४७ ई० में स्थापित किया गया था। उसी ने मिस्री एंटीक्विटी (पुरातत्व) विभाग की स्थापना की है।

म्यूज़ियम की वृद्धि इतनी शीघ्रता के साथ हुई कि वस्तुओं के रखने की जगह न रह गई और आखिरकार

१८६१ ई० में गीज़ा के महल में म्यूज़ियम स्थापित किया गया। बर्तमान म्यूज़ियम भवन १६०० ई० में बन कर तयार हुआ और गीज़ा महल से १६०१ ई० में वस्तुएँ हटाकर वहाँ रक्खी गईं। बर्तमान भवन बहुत बड़ा है और वहाँ बहुत अधिक स्थान सामग्री एकत्रित करने के लिये है। यह भवन ग्रीको-रोमन कला का बनाया गया है। इसके बनाने में २ लाख व्यय हुये थे। यह भवन नगर की बस्ती से बिलकुल अलग है और फाएर-प्रूफ होने के कारण भवन में आग लगने की कभी भी कोई सम्भावना नहीं है। यह भवन मिस्र की प्राचीन वस्तुओं के संग्रह के लिये सर्वथा उपयुक्त है।

पहली नवम्बर से ३० अप्रैल तक यह प्रतिदिन ६ बजे प्रातः काल से साढ़े चार बजे शाम तक खुला रहता है। पहली मई से ३१ अक्तूबर तक आठ बजे से १० बजे शाम तक खुला रहता है। सोमवार तथा सरकारी छुट्टी के दिनों में यह बन्द रहता है।

शुक्रवार के दिन कार्यक्रम में कुछ भिन्नता आजाती है और शीतकाल में सवेरे ६ बजे से सवा ग्यारह बजे तक और फिर डेढ़ बजे से साढ़े चार बजे शाम तक खुलता है। पर ग्रीष्म काल में म्यूज़ियम आठ बजे

संध्या से ग्यारह बजे रात तक खुलता है। शीतकाल में प्रवेश फीस प्रति व्यक्ति १० पियास्ट्र और ग्रीष्म काल में एक पियास्ट्र रहती है।

म्यूज़ियम की समस्त प्रधान वस्तुओं तथा देखने योग्य सामग्रियों का एक कैटलाग (सूची) म्यूज़ियम प्रबंध कमेटी की ओर से छपाया जाता है और प्रवेश करते समय वह ६ पियास्ट्र में मिलता है। इस पुस्तक में म्यूज़ियम का खाका रहता है जिसे म्यूज़ियम का अवलोकन करने के पूर्व ठीक तौर पर अध्ययन कर लेना नितान्त आवश्यक है। शायद संसार में यही एक स्थान है जहां चाहे आप जितनी इच्छा रखते हुये समय को नष्ट कीजिये तो भी समय नष्ट नहीं होगा और आप कुछ न कुछ नवीन प्राचीन कला का अवलोकन करेंगे।

पुस्तक में ब्योरेवार दो सूचियां दी गई हैं जिससे लोग भली भांति ज्ञान कर सकते हैं कि कौन सी वस्तु कहां पर है और ढूंढने में कठिनाई नहीं पड़ती है। सूची देखने से सेक्शन (शाखा विभाग) और कमरों का पता ठीक तौर पर चल जाता है हां सूची की गिन्तियों को ठीक तौर पर देखना तथा हिसाब लगाना

पड़ता है। इसलिये देखने वालों को चाहिये कि बड़ी बड़ी वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त करें। तूतनखामुन के मकबरे से ही इतनी अधिक सामग्री एकत्रित की गई है कि उन्हें ठीक तौर से देखने में कई दिन लग जाते हैं।

प्रवेश द्वार पर वाटिका के अंत में मैदान के भीतर अगस्ते-मरीटे पाशा की मूर्ति स्थापित है और म्यूज़ियम के सामने पश्चिमी पोर्टीको के नीचे (७७९) व्यक्तियों का एक समूह दिखाया गया है जिसे रैमसेस द्वितीय कहते हैं। यह मूर्ति पेसाह देव (ममी किया हुआ) सेकुमेत देवी के मध्य स्थित है।

चूंकि अजायब घर की वस्तुओं के स्थान बहुधा बदलने पड़ते हैं इस कारण प्रबंध कर्ताओं ने वस्तुओं को सिलसिलेवार नम्बर देकर ठीक तरह से सूची बनाली हैं यद्यपि वस्तुएं सिलसिलेवार नहीं रक्खी हैं। इसका मुख्य कारण यह है स्थान नई खोज वाली वस्तुओं के हेतु रिक्त करना पड़ता है। साथ ही साथ एक बड़ी संख्या में प्रदर्शन करने वाले व्यक्तियों के लिये भी स्थान रखना पड़ता है। म्यूज़ियम का खाका इस प्रकार है।

प्रधान प्रवेश द्वार से लोगों को चाहिये कि सीधे

बरामदे को पार कर सेंट्रल अट्रियम में चले जायं जिसके अंत में पहुंचने पर वह उत्तरी बरामदे में पहुँच जायंगे। उसके पश्चात् पश्चिम की ओर घूम जाना चाहिये और सातवीं शाखा को पार करते हुये पश्चिमी भाग होकर दक्षिणी बरामदे को वापस आजाना चाहिये।

उसके पश्चात् दक्षिणी पश्चिमी सीढ़ी मार्ग से ऊपरी भाग में चला आना चाहिये। छत पर पश्चिमी विभाग की ओर चलना चाहिये जिसके अंत तूतनखामुन गैलरी स्थित है। सातवीं, आठवीं और नवीं शाखाओं को पार करते हुये और चौथी शाखा का अवलोकन करते हुये पूर्वी विभाग होकर वह नीचे दक्षिणी बरामदे में पहुँच जायेगा। यहां तूतनखामन का प्राचीन खज़ाना (वस्तुओं का) भरा हुआ है। उसके पश्चात् बाईं ओर धमकर नं० ४६ और ५० शाखा को पार कर आगे चलना चाहिये। यहां दाहिनी ओर अड़तालीसवीं शाखा है। उसके पश्चात् आगे चलकर उत्तरी बराम्दे में नं० २ कमरे में पहुँचना चाहिये। उसके पश्चात् हीरा, मोती, मणि आदि नं० ३ कमरे को देखना चाहिये। उसके

पश्चात् दाहिनी ओर घूमकर उत्तरी सीढ़ी मार्ग को आना चाहिये और फिर नीचे के तल्ले में चले आना चाहिये। उसके पश्चात् पूर्वी भाग में चलना चाहिये और इसके अंत में बाईं ओर घूमना चाहिये और फिर बिक्री वाले कमरे में चले जाना चाहिये। बिक्री वाले कमरे से बाहर निकलने का एक मार्ग है। प्रधान या दक्षिणी गैलरी से भी बाहर निकलने का एक द्वार है।

———

नीचे वाला फर्श

सेक्शन ४८ (नं० ६ और ६) में दो लकड़ी के बोट हैं जो सेनुस्सेट द्वितीय के मृतक संस्कार में प्रयोग किये गये थे। यह बोट उसके पिरेमिड के समीप डाशूर में पाए गये थे। इसी सेक्शन में नं० १० में सेनुस्सेट तृतीय की एक मूर्ति है।

सेक्सन ३८ (नं० ६४०) में निटोकिरिस की पत्थर की मूर्ति है। यह आमून की देवि रूपी स्त्री मानी जाती है।

सेक्सन ३३ (नं० ६१६ और ६२०) यहां टुथ-मोसिस प्रथम मांस भक्षक तथा रानी हैत्तपसूट हैं। यह

दोनों तोशदान की शकल के हैं। नं० ६२१ में काले पत्थर की शय्या है जिसपर ओसिरिस की ममी लेटी हुई है। ६२२ नं० में लाल बिल्लौरी पत्थर की एक बड़ी मूर्ति सेवेखोलेटे खाते फेरे की है।

सेक्शन २८ (नः ६२७) आखेनाटन के महल का पच्चीकारी किया हुआ रंगा-चुंगा पर्श का पलास्टर है।

सेक्शन २३ (६१३ और ६१७) में मेरमेशा बादशाह की दो काले बिल्लोरी पत्थर की बड़ी बड़ी मूर्तियाँ हैं।

सेक्शज १८ (नः ६१०) में चूने के पत्थर की मूर्तियों का कए समूह है जिसमें अमीनोफिस तृतीय, रानो तिपो और उसके तीन पुत्रितों को मूर्तियां प्रधान हैं।

सेक्शन तेरह में ३६५ नम्बर लाल बिल्लोरी पत्थर की मूर्तियां एक राजा की हैं। यह राजा ईसेस और हाथौर के मध्य दिखलाया गया है।

५६६ नः में एक बड़ा ही सुन्दर दृश्य दिखाया गया है। यह चित्र स्टेला का है। इसके एक ओर

अमेनोफिस द्वितीय का चित्र खुदा हुआ है और दूसरी ओर फिलिस्तीन का एक चित्र है जिसमें दिखलाया गया है कि फिलिस्तीन में रैम्सेस द्वितीय के पुत्र मनेप्टाह ने किस प्रकार अपनी विजय प्राप्त की थी जिसमें ये शब्द खुदे हैं 'इसराल पीस दिया गया अब इसमें बी नहीं हैं'। अर्थात् इसराल के मानने वाले नष्ट कर दिये गये अब उनमें काई शेष नहीं रह गया है और अब वह पनप नहीं सकते। मिस्री पुस्तकों में यहीं एक घटना है जिसमें इसराईलों के सम्बन्ध वर्णन मिलता है इसके अतिरिक्त और कहीं भी कोई वर्णन नहीं पाया जाता है।

यह सब देखने के पश्चात् उत्तरी बरामदे में बाईं ओर चलने पर सातवें आठवें सेक्शन को पार करने के पश्चात् म्यूजियम का पश्चिमी भाग आ जाता है। इस मार्ग में जो वस्तुएं हैं वह साधारण हैं।

छठे सेक्शन के ४७१ और ४८७ नम्बरों में कई सन्दूक रक्खे हैं जिनमें राजाओं के प्रयोग में आने वाले सामान रक्खे हैं। इन सन्दूकों में एक और डी नम्बर वाले सन्दूकों में अखेनाटन बादशाह की बहुत सी वस्तुएं रक्खी हैं

सेक्शन बारह के ४४५ और ४४६ नम्बर में बलुहे पत्थर का बना हुआ एक चैम्बर है जिसकी छत गुम्बदाकार है जिसके भीतर गाय की एक मूर्ति बन्द है। यह मूर्ति हैथोर देवी की है।

इस मूर्ति में प्राकृतिक मान चित्र जो अंकित किया हुआ है वह तीन हज़ार चार सौ वर्षों का पुराना होने पर भी अब भी वैसा नया का नया बना हुआ है।

सेक्शन १६ के ५०७ नम्बर में चार स्फिनिक्सें हैं। ये बारहवें वंश के राजाओं की मूर्तियां हैं। सेक्शन बत्तीस के एक सौ छत्तीस ई० में ६ हंस अंकित हैं। २२३ नम्बर में मिस्री शिल्पकार राजकुमार राहोटेप और उसकी स्त्री नेफेर्ट की तसवीरें अंकित की गई हैं। यहीं २३० और २३१ नम्बर में रिपे प्रथम और उसके पुत्र की मूर्तियां हैं। यह मिस्री धातु से बनी हुई सबसे बड़ी और प्राचीन मूर्ति है।

सेक्शन ४२ के एक सौ पचहत्तर नम्बर में मेसेरियस राजा की मूर्ति है। इस राजा ने गीज़ा के तीसरे पिरेमिड को बनवाया था। इसी प्रकार एक सौ अड़तीस, उन्तालीस और चालीस नम्बरों में मूर्तियां हैं।

कहरा-दर्शन

पश्चिमी पहलू के अंत में प्रवेश मार्ग के आगे ऊपर जाने के लिये दक्षिणी-पश्चिमी सीढ़ी मार्ग है। इससे फिर यही ऊपरी, भाग में चले जाते हैं। ऊपर जाने पर सेक्शन ६ में राजाओं के मोहर के चित्र हैं।

तूतनखामुन मक़बरों का खज़ाना

तूतनखामुन मिस्र का एक राजा था। वह बालक ही था लगभग ३३०० वर्ष पूर्व वह गद्दी पर बैठा था। उसने कुछ वर्षों तक मिस्र पर शासन किया था। १९२२ ई० में लक्सर स्थान पर इस राजा के मक़बरे का पता मिस्टर हावर्ड कार्टर ने लगाया। यह राजा फैरो बादशाह का दामाद था। फैरो मिस्र में अकेनाटेन के नाम से भी प्रसिद्ध है। उसने अटोन की पूजा का मत चलाया था इसलिये मिस्री लोग उसे नास्तिक कहते थे क्योंकि उसकाल में मिस्र का धर्म आमेन था। जब तूतनखामुन का व्याह हुआ तो अटोन मत का अनुयायी था पर व्याह के कुछ ही समय पश्चात् उसपर पुजारियों का प्रभाव पड़ गया जिससे वह फिर आमेन मत मानने लगा। उसने अपनी राजधानी टेलुलअमरना से हटाकर थेब्स में कर दिया। लोगों का कहना है कि धर्म परि-

वर्तन के कारण ही उस काल को इतनी अधिक सामग्री मिल गई है नहीं तो शायद न मिलती। ६ वर्षों में जो कुछ भी घटनाएं घटी हैं प्रायः सभी घटनाएं मूर्तियों तथा तस्वीरों द्वारा दिखाई गई हैं। अपने शासनकाल में उसने अपना नाम बदल दिया था। पहले उसका नाम तूतनकातेन था। तूतनकातेन का अर्थ सूर्य का जीवन सुन्दर होता है। इस प्रकार वह अपने प्राचीन मत में आने का परिचय देता है।

शायद यही मक़बरा है जो डाकुओं से बच गया है क्यों कि इस मक़बरे के प्रवेश मार्ग पर एक शिलागिर पड़ी थी जिससे मार्ग बन्द होगया था और लोग भीतर नहीं जासके। इस मक़बरे की वस्तुओं द्वारा तूतनखामुन वंश के राजकाल के इतिहास पर बहुत कम प्रकाश पड़ता है इसी कारण विद्यार्थियों को मिस्री कला-कौशल तथा धन के सम्बंध में अपने अध्ययन को पुनह दुहराना पड़ रहा है। जब इस मक़बरे का पता लगा था तो इसके भीतर का स्थान सामान तथा धन से भरा हुआ था और द्वार बन्द करके मोहर लगा दी गई थी। द्वार की रक्षा दो लकड़ी की मूर्तियां कर रही थीं जो ६६

और १८१ नम्बर में दिखाई गई हैं। राजा का शरीर ममी की शकल वाले तीन कफ़नों में रक्खा हुआ था और समस्त एक मांस भक्षक सूचक शिला के बर्तन में बन्द था। मांस भक्षक तथा उसके सामान सभी एक जाल में बन्द थे।

भीतरी काफिन नम्बर २१६ ठोस सोने का है जिसका भार २५० पौंड है। इसी में एक राजा का शरीर है जो हीरे, जवाहिरात से ढंका हुआ है। लक्सर के मकबरे में उसकी मूर्ति वर्तमान है और शायद ही कभी वह वहां से हटाई जाय।

यहां के सामान जैसे जैसे म्यूज़ियम में आते गये वैसे वैसे उनपर नम्बर पड़ता गया। लोगों को चाहिये कि यहां के सभी डब्बों और संदूकों को भली भांति देखें और सिलसिलेवार सूची का ध्यान न करें। ये सभी वस्तुएं बड़ी ही मज़ेदार तथा हृदय को लालायित करने वाली हैं। यहां इतना स्थान नहीं है कि वहाँ की समस्त वस्तुओं का वर्णन सिलसिलेवार लिखा जाय अतः केवल कुछ का ही वर्णन किया जा रहा है। इसी से मक़बरे के खज़ाने की उपयोगता सिद्ध हो जावेगी।

यहां एक्कीस नम्बर के संदूक में बादशाह का मसनद और एक फुटस्टूल है जिसपर संगमरमर के चूने की पच्चीकारी तथा एक परी की मूर्ति अंकित की हुई है। बाइसवें संदूक में देवदार की एक नक्क़ाशीदार कुर्सी है जिसके पीछे के भाग में बड़ी सुन्दर नक्क़ाशकारी तथा पच्चीकारी है। मध्यवर्ती "सोनहरी संसार के अंत की" तस्वीर है। उसके दोनों ओर राजा का होरस नाम अंकित है। जिसके सिर पर होरस-बाज की तस्वीर है जो उत्तरी तथा दक्षिणी मिस्र के ताज को सम्बोधित करती है। मूर्ति के सामने शाही बड़े सांप की तस्वीर है। इसके गले, नाखून औप कोण वाले भाग सोने के है। शेर के पंजों के नाखून हाथी दांत के बनाए गये हैं। इस सिंहासन के पानों के मध्य दो कमल तथा पोस्ते के पौधे बने हैं। कमल का पौधा ऊपरी मिस्र का और पोस्ते का पौधा निचले मिस्र का सूचक है।

पहले केस (संदूक) के सोलहवें नम्बर में मानेक्विन बादशाह की तस्वीर है। नक्क़ाशीदार लकड़ी की एक मूर्ति है जिसपर संगमरमर के चूने का प्लास्टर

किया हुआ है। यह एक अनोखे ढंग की मूर्ति है जो कमर और कोहनी पर बड़ी कारीगरी के साथ कटी हुई है। शरीर स्वेत रंग से इस प्रकार रंगी है जैसे कि वह कमीज़ पहने हुये हैं। यह मूर्ति पूरे मनुष्य के शरीर के बराबर है और इसी कारण बादशाहों की पोशाकें इसे पहँनाई गई हैं। इसलिये यह किसी न किसी बादशाह की मूर्ति है। पर यह महारानी अनखेसनामुन की मूर्ति भी कहीं जा सकती है क्यों जो ताज सिर पर है वह महारानियों का सा है।

चौदह नम्बर के केस में चार बड़े चांदी के सुगंधित चांदी के बर्तन हैं जिसके दोनों ओर लाखों वर्षों को सूचित करने वाले चिन्ह हैं और उत्तरी तथा दक्षिणी मिस्र को सूचित करने वाले कमल तथा पोस्ते के पौधे बने हैं जो दोनों प्रदेशों के संयुक्त होने का सम्बोधन करते हैं। १८५ नम्बर का सुगंधित चांदी का घड़ा बड़ा ही सुन्दर है उसपर सोने और हाथी दांत का काम किया हुआ है।

सोलह नम्बर के केस में राजा का प्याला बना है। यह बड़ा सुन्दर कमल के फूल की भांति बना है।

इसको मुठियाएं कमल के फूलों की हैं और जो पंखड़ियां बनी हैं उनसे सिद्ध होता है कि वे 'आदि जीवन' की मूर्ति के सहारा दिये हुये हैं। प्याले के चारों ओर तस्वीरों का लेख है जिसका अनुवाद यह है कि तुम चिरजीवी हो, तुम थेब्स के प्रेमी हो और अपना मुँह उत्तरी वायु की ओर किये हुये हो। तुम्हारी आंखें विश्राम की सूचना दे रही हैं।

तेरह नम्बर के केस में चलती हुई लाठियां हैं। यह चलने वाली लाठियाँ लकड़ी की बनी हैं जिस पर सोने की पतली चद्दर चढ़ी हुई है। इसके ऊपर की नक्काशी मिस्री कला की है। नक्काशी में राजा के बैरी दिखाये गये हैं। एशिया की कला में हाथी दांत का अफ्रीकन में काली लकड़ी का प्रयोग अधिक होता है।

पांच और छः केसों में राजा तूतनखामुन की शरीर के बराबर बराबर दो मूर्तियां हैं। यह मकबरे के प्रधान कमरे के सामने दो चौकीदार की भांति मिली थीं। यह मूर्तियाँ लकड़ी की हैं। जिनके ऊपर

काली वार्निश तथा कुछ स्वेत है। आँख की भौहें तथा पुतलियां सोने की हैं।

बीस नम्बर का केस सुन्दर, भव्य पच्चीकारी किया हुआ लकड़ी का सन्दूक है। इसके ऊपर छोटी छोटी बहुत सी तस्वीरें बनी हैं। इसमें राजा के विभिन्न शिकारों के चित्र हैं। राजा एशिया में अपने शत्रुओं से युद्ध करता हुआ और उन्हें कुचलता हुआ दिखाया गया है। राजा की रक्षा गृद्ध, सूर्य और जीवन मूर्तियां कर रही हैं। केस नम्बर तेईस में राजा और रानी की तस्वीरें हैं। पच्चीसवें केस में राजा के मलमल वाले दस्ताने हैं।

केस ई० सत्ताईस और उन्तीस में मशाल और मशाल को लेने वालों की मूर्तियाँ हैं। दो मूर्तियां मशालें लिये हुये हैं और जीवन का सम्बोधन करती हैं। इसमें एक अब भी मरोड़े हुये मलमल की मशाल तेल के प्याले में लिये हुये है। ८६ नंबर में ठास हाथी के दांत का हीरे जवाहिरात का सन्दूक है। इसके सामने राजा की उपाधियां खोदी हुई हैं। पीछे कमल के फूल को छड़ी है जो उत्तरी मिस्र का संबोधन करती हैं। इसके अधिकतर भाग सोने के बने हैं।

उन्तीस नंबर के केस में राजा का सबसे भीतरी कफ्फन वाला सन्दूक है यह वह काफिन है जिसमें राजा की असली ममी थो। ममी राजाओं की घाटी में छोड़ दिया गया है। यह काफिन मोटे सोने का बना है। यह बड़ा ही सुन्दर बना हुआ है।

केस बत्तीस में ठोस सोने का ढक्कन है जो राजा के ममी के सिर को ढके हुए था। इस ढक्कन में आंखें तथा दाढ़ी आदि भी बनी हैं। केस नम्बर तीस के तीन सौ बारह और सोलह में कालरों के नमूने हैं। यह राजा के यूसेक् नामक कालर प्रतिकार स्वरूप हैं। केस नम्बर तैंतीस में बाईं ओर राजा की नक्काशदार अँगूठियां तथा कड़े और चूड़ियां और हार इत्यादि हैं। केस नम्बर तैंतीस में राजा के सीने पर के पहिनने के आभूषण आदि हैं।

केस नम्बर ३४ और ३४ बी में हीरे जवारिहात मणि आदि हैं। ३०,३३,३३ बी, ३४ और ३४ बी नम्बर के तमाम हीरे, जवाहिरात, मणि तथा दूसरे आभूषण राजा तूतानखामुन के ऊपर या उसके मांस भक्षन मूर्ति के आस पास मिले थे।

केस नम्बर ४० और ४१ में बहुमूल्य छाती के आभूषण, हार, चूड़े आदि हैं। इन केसो के आभूषण एक बड़े सन्दूक में एक बड़े कमरे में मिले थे।

केस नम्बर पैंतीस के ३१७ में राजा का स्वर्ण मुकुट है। यह मुकुट तूतानखामुन के सिर पर मिला था। २२३ नम्बर में राजा का इत्रदान है। यह चाँदी, सोने और हाथी दांत का बना है। और इसको पच्चीकारी तथा बनावट बड़ी ही सुन्दर है।

केस नम्बर ३६ के २२२ नम्बर में तूतानखामुन राजा का दूसरा काफिन (कफ़्फ़न) है। इसके भीतर सोने का काफिन था और यह स्वयं एक दूसरी लकड़ी के काफिन में रक्खा था। लकड़ो वाला काफिन राजाओं की घाटी में है।

केस नम्बर २७ में सोने के खड़ाऊं, अंगुलियों और औठों के आभूषण हैं जो ममी में मिले थे। इन्हीं के साथ चार सोने की पेटियां हैं।

केस ई० नम्बर ८९ में हाथी दांत का एक सुन्दर सन्दूक है। इसके बहुत बड़े भाग में सोना लगा हुआ है और बड़ा ही सुन्दर है।

केस नम्बर सत्ताइस में लकड़ी के धनुष है जिस पर जहाज़ की मूर्तियां बनी हुई हुई हैं। केस नं० १५ में राजा के घराने में उत्सवों के अवसर पर प्रयोग में आने वाला बड़ा पंखा है। जिसकी मुठिया सोने के पत्र से जड़ी हुई है। केस नं० अड़तालीस के ३९६ नं० में लाल और काली मज़बूत लकड़ी का बना हुआ एक सुन्दर तोशदान है। तोशदान उसे कहते हैं जिसमें कारतूस आदि रक्खे जाते हैं।

केस नं० ४३ के ४०७ और ४११ में तूतनखामुन राजा की पांच सोनहरी जड़ाऊ लकड़ी की मूर्तियां हैं। केस नम्बर ५६ के ४४२ और ४४३ में दो छोटे लकड़ी के काफिन हैं। इनमें छोटे के अन्दर रानी टाई के बाल की एक लटा है। टाई तूतनखामुन राजा की स्त्री अंकेशेनामुन की माता थी।

केस नम्बर बत्तीस के ४५२ नम्बर में सोने के काफिन का एक ढांचा है जिसमें राजा के मृतक शरीर का नमूना दिखाया गया है। केस जे के ५०२ और ४ नम्बर में मदिरा की सुराहियां तथा बोतलें है। केस

नम्बर अड़तीस के पांचसौतीस में लकड़ी की चारपाई है जिस पर सोने की एक चादर बिछी हुई है। चारपाई एक सुन्दर बहुमूल्य डोर से बिनी हुई है और वैसी ही डोर की मसहरी भी है। केस नम्बर ५८ के ५०२ और चार में के ५३५ नम्बर में एक कुर्सी पर बोट का एक माडल (नमूना) है। इसके सामने वाले भाग में बैठी हुई एक स्त्री की बड़ी ही सुन्दर मूर्ति बनी हुई है।

केस नम्बर एक के ५४० में हाथी दांत का बना हुआ एक खेल का सामान है। इस खेल का नियम अब तक किसी को मालूम नहीं हुआ है।

इस प्रकार उत्तरी गैलरी और पूर्वी भाग के तूतन-खामुन के खज़ाने के अवलोकन के पश्चात् देखने वाले दक्षिणी गैलरी में प्रवेश करते हैं। ४८ और ५० सेक्शनों को पार करने के पश्चात् दाहिनी ओर अड़तालीसवां सेक्शन पड़ता हैं उसके पश्चात् पश्चिमी गुलाम गर्दिश आ आती है। उसके बाद उत्तर गैलरी को पार करने के पश्चात् दूसरा नम्बर मिलता है। तीसरे नम्बर में हीरे जवाहिरात का कमरा है। यहाँ हीरे जवाहिरात का एक बहुत सुन्दर संग्रह है। यह

संग्रह प्रथम वंश से लेकर बैजनटाइन काल तक का इतिहास बतलाता है।

निचला फर्श वाला भाग

इसके पश्चात् दर्शक गण उत्तरी-पूर्वी सीढ़ी मार्ग पर जाते हैं। और नीचे के फर्श पर आ जाते हैं। यहां पूर्वी भाग में बहुत सी वस्तुएं देखने योग्य हैं। चौदहवें और पन्द्रहवें सेक्शन में उन्नीसवें और बीसवें वंश की वस्तुएं हैं। चौबीसवें और पच्चीसवें में बीसवें वंश के पश्चात् वाली वस्तुए है। चौंतीस और पैंतीस सेक्शन में ग्रीको-रोमन काल की वस्तुओं का संग्रह ४४ और ४५ में काप्टिक कला की वस्तुएं हैं।

पूर्वी विभाग को छोड़ने पर दर्शकगण दाहिनी ओर प्रवेश मार्ग पर पहुंच जाते हैं। ४९ और ५० नम्बर में प्टोलेमिक काल की कुछ बड़ी बड़ी वस्तुएं हैं। उसके पश्चात् बाईं ओर घूमने पर बिक्री वाला कमरा मिलता है। बिक्री वाले कमरे से वाटिका में आने का मार्ग प्रधान गैलरी से भी है।

कहरा-दर्शन

म्यूज़ियम में जो बिक्री का कमरा है। वहां से लोग जिन वस्तुओं को पसन्द करें उन्हें ठीक ठीक मूल्य पर खरीद सकते हैं। म्यूज़ियम की सभी बिक्री वाली वाली वस्तुओं पर बाज़ार भाव का दाम लिखा रहता है इस लिये लोग उसे समझ कर सामान लिया करते हैं। जिससे वह विश्वास कर सकते हैं कि वस्तु का मूल्य बाज़ार भाव से अधिक नहीं हैं।

प्राचीन मिस्री देवों की मूर्तियाँ

जिस किसी ने भी मिस्री इतिहास का अध्ययन नहीं किया या किसी जानकार के साथ होकर मिस्र का भ्रमण नहीं किया वह म्यूज़ियम को देख कर अवश्य ही चकित हो जाता है। इतिहास के जानकारों को उसका थोड़ा सा ज्ञान भी उसके आनन्द को दो गुना और चार गुना बढ़ा देता है। दर्शक को आश्चर्य होगा कि विभिन्न मूर्तियां किस देव या मनुष्य की प्रतिमाएं हैं और इनका क्या अर्थ है जो बार बार किसी एक प्रतिमा का प्रयोग किया गया है। फैरो काल की वस्तुओं में यह बात अधिक पाई जाती है।

प्राचीन मिस्रियों का आवागमन में विश्वास था। वह समझते थे कि मरने के पश्चात् मनुष्य को फिर किसी योनि में जन्म लेना पड़ता है जैसा कि भारतीय हिन्दुओं का विश्वास है कि जीव या आत्मा कभी नहीं मरता बल्कि वह एक शरीर को छोड़ कर दूसरे शरीर को उसी प्रकार धारण कर लेता है जिस प्रकार मनुष्य एक वस्त्र को त्याग कर दूसरा वस्त्र धारण कर लेता है। मिस्री लोगों का विश्वास था कि मृत्यु दूसरी दुनिया में प्रवेश करने का द्वार मार्ग है। दूसरी दुनियां भी हमारी दुनिया की भांति है। उनका धर्म अधिकतर मृत्यु ईश्वर द्वारा कर्मों के न्याय तथा मृत्यु के पश्चात् जीवन के सम्बन्ध में निर्धारित था। ओसिरिस उनके प्रधान देवगणों में से है जिसका वर्णन मृतक व्यक्तियों की पुस्तक में प्रधान स्थान रखता है। मिस्री लोगों का विचार था कि जब आत्मा शरीर को छोड़ता है तो अनूबिस देव उसे ओसिरिस के सामने न्याय के लिये उपस्थित करते हैं। आत्मा ओसिरिस देव के सामने एक तराज़ू पर शुतुर्मुर्ग के पंखों से तौला जाता है। तौलने का काम टाथ देव करते हैं। यह देव सत्यरूप

माने जाते थे। इसका अर्थ यह हुआ कि मृत्यु के पश्चात् आत्मा को सत्य की कसौटी पर चढ़ना पड़ता है उसने अपने भूतकाल में शरीर द्वारा असत्य अथवा सत्य कार्य किये।

साधारण रूप से ओसरिस देव की सूरत शाही-रूप से बनाई जाती है उनके सिर पर लम्बी नोकदार टोपी रहती है और कभी कभी टोपी के इधर उधर पंख दिखा दिये जाते हैं।

ईसिस दूसरी एक और प्रसिद्ध देवी हैं। वह बहुधा ओसरिस को बहिन और स्त्री के रूप में दिखाई जाती हैं। छब्बीसवें राजवंश के पश्चात् उन्हें पालन-पोषण करने वाली माता के रूप में दिखाया गया है। वह अपने पुत्र होरस को अपने घुटनों पर रक्खे हुये हैं। उसके सिर पर एक अनोखा भेष रहता है जिसकी सूरत दो लम्बे सींगों की भाँति होती है। सींगों के मध्य में मारने वाला चक्र है।

होरस देव का सिर बाज़ की भाँति होता है। कहीं-कहीं तो उनका समूचा शरीर बाज़ का बना कर दिखाया गया है। यह बात तूतानखामुन के खज़ाने वाली वस्तुओं में अधिक पाई जाती है।

मेम्फिस में एक स्फिंक्स

क़हरा (केरो) शहर का एक दृश्य

अनूबिस शरीर से बिलग होने वाली आत्मा के देव हैं। उनका सिर स्यार का है इसका मुख्य उद्देश्य यह है कि उस समय स्यार क़ब्रस्तानों (स्मशानों) पर अधिक आक्रमण करते थे।

थाथ लेखकला और बुद्ध के देव माने जाते थे। उनका पहिचानना सरल है क्योंकि उनका सिर प्रत्येक स्थान पर इबिस चिड़िया का दिखाया गया है। बैबून और हीबरिस दोनों पवित्र माने जाते थे। बैबून अफ्रीका के लंगूरों को कहते हैं। थाथ ओसरिस के सन्मुख आत्मा को तौलने वाली तराज़ू उठाये रहते हैं। वही न्याय के समय का ब्योरा लिखते भी हैं।

शेक़मेन और बेस तूतनखामुन के खज़ाने वाली गैलरी में शेक़मेन की एक सुन्दर मूर्ति है। इस देवी की मूर्ति का सिर शेर का है और वह सूर्य की गर्मी का स्वरूप है। बेस्टेट एक दूसरी देवी है। यहां उसका सिर बिल्ली का दिखलाया गया है। वह बेस देवी से मिलती जुलती हैं बेस की देवी की छोटी मूर्ति एक बौने की सी है। जो अपने ऊपर बिल्ली अथवा शेर का भेष धारण किये हुये हैं।

हाथोर : नम्बर बारा कमरे में हाथोर देवी की मूर्ति बड़े सुन्दर रूप से दिखाई गई है। यह प्रतिमा लक्सर
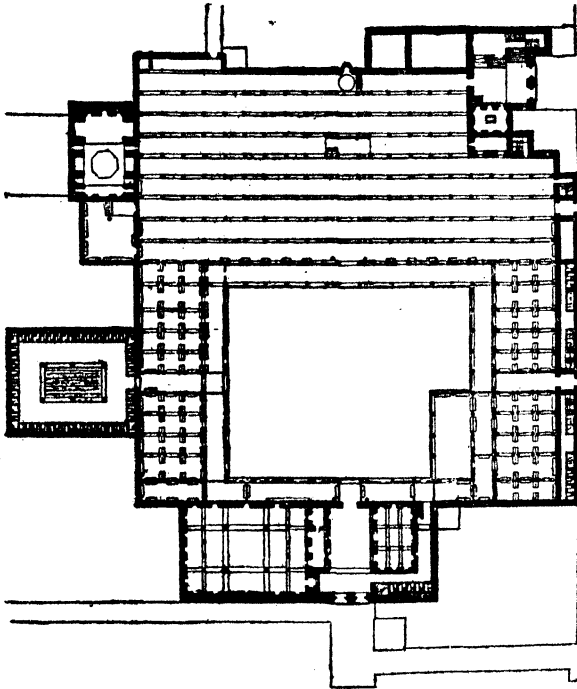
(संसार के सबसे बड़े मुसलमानी विश्व-विद्यालय अल् अजहर का मानचित्र)

के बीरुल बहीरा के मन्दिर से लाई गई थी मन्दिर में उसकी मूर्ति एक गाय की दिखलाई गई है। कभी

कभी गाय के सिर और कभी कभी केवल सींगों से उसकी प्रतिमा दिखाई जाती है।

माट सत्य रूपी देवी मानी जाती थी। वह सदैव मनुष्य रूपी प्रतिमा में दिखाई जाती है वह अपने हाथ में सदैव जीवन रूप चिन्ह लिये रहती है।

प्टाह और रा :—प्टाह कभी कभी ममी रूपेण दिखाये गये हैं। बाद को वह सेकर और प्टाह सेकर से मिला दिये गये और एक छोटे बौने की भांति दिखाये गये हैं। इनका सिर इस रूप में चौड़ा चपटा दिखाया गया है।

प्राचीनकाल में रा देव सूर्य का रूप अथवा अवतार माने जाते थे उनकी पूजा होती थी। कभी कभी वह सूर्य चक्र के रूप में पर्वतों के मध्य से निकलते हुये दिखाये जाते हैं। कभी कभी यह चक्ररूपी सूर्य दो पंखों के मध्य और कभी एक बोट में आकाश को पार करते हुये दिखाये गये हैं।

आमन और रा :—कारनाक के बड़े देव आमन ही माने जाते हैं। हंस और गौरय्या पक्षियां उनकी पवित्र चिड़ियाँ मानी जाती हैं रा उनकी स्त्री मानी

जाती हैं और मिस्री लोग उन्हें मां कहा कहते थे। उनका चिन्ह गृद्ध पक्षी का है। गृद्ध मिस्री राजाओं के मूर्ति के ऊपर उड़ता हुआ सदैव दिखाया जाता है जिससे यह सिद्ध होता है कि वह राजा की रक्षा कर रहा है। रानियों का शिर भेष सदैव गृद्ध रूपी मिस्री मूर्तियों में दिखाया गया है।

सेरापिस देव सांड रूपी दिखाये जाते हैं वह पुनः उत्पत्ति की शक्ति रखते हैं। भेड़ा रूपी एक दूसरे देव हैं जो उत्पत्ति शक्ति रखते हैं। ताउर्त देव बच्चों की रक्षा करने वाले माने गये हैं।

नुट और नीट :—नुट आकाश रूपी देव। वह स्त्री भेष में दिखाये जाते हैं जिनके शरीर पर तारागण दिखाये जाते हैं। नीट शिकार तथा कातने वाली देवी मानी जाती हैं। उसका चिन्ह दो बाण हैं जो एक दूसरे पर काटते हुये रक्खे गये हैं। मिस्री तस्वीरों वाले लेखों में वह जुलाहे के बुनने वाले शटिल की भांति प्रकट किये गये हैं।

अरबी म्यूज़ियम

यह म्यूजियम गवरनोरेट के सामने रायल लाइब्रेरी के बगल में स्थित है। यह शुक्रवार और सरकारी छुट्टियों के दिनों के अतिरिक्त सदैव खुला रहता है। शीतकाल में यह म्यूज़ियम नौ बजे से ४ बजे शाम तक और गरमी में ८ बजे सवेरे से एक बजे दिन तक खुला रहता है। शीतकाल में प्रवेश फीस ५ और ग्रीष्म काल में १० पियास्ट्र प्रति मनुष्य ली जाती है। इसमें प्राचीन अरबी काल की वह वस्तुएँ एकत्रित की गई हैं जो मस्जिदों में पाई गई थीं। इनमें प्राचीनकाल की कुछ लालटेने भी हैं उनमें से एक चौदहवीं सदी की है और उस पर सुलतान हसन का नाम अंकित है।

———

मिस्री लाइब्रेरी

राएल मिस्री पुस्तकालय की स्थापना १८६७ ई० में हुई थी। यह अपने आदि स्थान से १६०४ ई० में हटाया गया और आधुनिक भव्य स्थान में लाकर रक्खा गया। इसमें एक बहुत बड़ा बहुमूल्य पुस्तकों का

संग्रह है। यहां की पुस्तकें अरबी और योरुपीय भाषा की हैं। अरबी तथा क़ुरान की हस्त लिखित पुस्तकें यहां हैं प्राचीन मुद्रा का भी एक अच्छा संग्रह है।

शीतकाल में यह पुस्तकालय नौ बजे सवेरे से एक बजे दिन तक और फिर चार बजे संध्या से आठ बजे संध्या तक प्रतिदिन खुला रहता है। सोमवार को और शुक्रवार को प्रार्थना के घंटों में पुस्तकालय बन्द रहता है। प्रवेश फीस बिलकुल नहीं ली जाती है। ग्रीष्म काल सवेरे आठ बजे से बारह बजे तक और संध्या पांच बजे से आठ बजे तक पुस्तकालय खुलता है। यह मिदल बाबुलखल्क में स्थित है।